UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182461
UNIVERSAL
LIBRARY

नदी प्यासी थी

पाँच एकांकी

डा० धर्मवीर भारती

किताब महल
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
१९५४

प्रकाशक
किताब महल,
५६ ए, जीरो रोड,
इलाहाबाद।

मुद्रक
अनुपम प्रेस,
१७, जीरो रोड,
इलाहाबाद।

प्रस्तुत संकलन में मेरे पाँच एकांकी नाटक संगृहीत हैं; जिनमें से चार रंगमंच के लिये हैं तथा एक रेडियो के लिये। मैंने अपनी ओर से यही प्रयास किया है कि रंगमंच के लिये ये पूर्णतया उपयुक्त सिद्ध हों, फिर भी जहाँ तक नाटकों का सम्बन्ध है नाटककार और निर्देशक मिल कर ही उसका अन्तिम स्वरूप स्थिर कर सकते हैं। यहाँ तक कि रिहर्सल के दौरान में अक्सर अभिनेता कुछ ऐसे संशोधन उपस्थित करते हैं जो नाटक की सफलता के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इस दृष्टि से बड़े से बड़े नाटककार की कृति को 'फाइनल ड्राफ्ट' ही मानना चाहिये जब तक वह रंगमंच पर प्रस्तुत न कर दी जाय।

निर्देशक का दायित्व भी कम नहीं है। अकुशल या अदूरदर्शी निर्देशक अक्सर महत्वपूर्ण नाटकों की सम्भावनाओं को भी पहले से समझ नहीं पाते। चेखव का 'सीगल' एक निर्देशक के हाथ में पड़कर जनता के कोप का भोजन बना किन्तु दूसरे निर्देशक ने उसी पर परिश्रम कर उसे रंगमंच का अत्यन्त सफल नाटक बना दिया। हिन्दी में रंगमंच के अभाव के कारण निर्देशक और लेखक का यह पारस्परिक सहयोग आज सुलभ नहीं है। यह हिन्दी के नाटककार का दुर्भाग्य है।

मेरी कई नाट्यकृतियों को श्री प्रभाकर आचार्य बड़ी सफलता से प्रस्तुत कर चुके हैं। सर्वश्री गोपालदास, उपेन्द्रनाथ अश्क, विजयदेव नारायण साही तथा डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने मुझे समय समय पर बड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। उनके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

आशा है ये नाटक पाठकों को रुचिकर सिद्ध होंगे और रंगमंच के विकास में अपना विनम्र योग प्रदान करेंगे।

१९९ अतरसुइया
इलाहाबाद

धर्मवीर भारती

अनुक्रम

पृष्ठ	
१	नदी प्यासी थी
३५	नीली झील
५१	आवाज़ का नीलाम
६५	संगमरमर पर एक रात
९९	सृष्टि का आख़िरी आदमी

नदी प्यासी थी

पात्र

राजेश वर्मा

शंकरदत्त

डा० कृष्णस्वरूप कक्कड़

पद्मा

शीला

घटना-काल १९४९ की बरसात

दृश्य १

एक कमरा जो स्पष्टतः किसी लड़की का मालूम पड़ता है क्योंकि स्वच्छ है किन्तु सुरुचिविहीन है। सामान बड़ी तरतीब से लगा है पर उस तरतीब से नहीं जिससे कलाभवन में चित्र लगे रहते हैं, बल्कि वैसे जैसे किसी दूकान के शो-रूम में बिकाऊ चीजें लगी रहती हैं। सामने बहुत बड़ी सी एक खिड़की है जिस पर एक बड़ा सा सादा पर्दा पड़ा है। कमरे भर में केवल एक तस्वीर है, मेज पर। एक २० साल की हँसमुख लड़की की तस्वीर। तस्वीर के बगल में टेस, कामायनी और टेनीसन के मोटे वॉल्यूम रक्खे हैं, बगल में टैलकम पाउडर का एक ऊँचा सा डब्बा।

स्टेज पर बाँई ओर एक दरवाजा है। कमरे के बीचोबीच चटाई पर बैठा हुआ, चौकी पर आइना रख कर शंकर शेव की तैयारी कर रहा है। ब्रश में पानी लगा कर साबुन के प्याले में घुमा रहा है। बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है।

शंकर — उँह! किसी पल चैन नहीं। अब पता नहीं कान आ गया मरने! (दरवाजा फिर खटकता है। कोई बाहर से नेम-प्लेट पढ़ता हुआ—"शंकर दत्त!....मकान तो यही मालूम पड़ता है। अरे शंकर!' शंकर जल्दी से ब्रश पानी के गिलास में डाल देता है। आधा उछल कर) अरे! राजेश आया! (बाँई ओर देखकर, पत्नी को पुकारता हुआ) शीला! लो राजेश तो आ गया। (उठ कर दरवाजा खोलता है। राजेश हाथ में

अटैची लटकाये हुए आता है। शंकर उठकर अटैची हाथ में लेता है) ओह डियर! तीन दिन से तुम्हारा इन्तजार हो रहा है। (बाँई ओर से शीला आती है।)

शीला (नमस्ते करती हुई) रोज एक आदमी का खाना ज्यादा बनाती थी मैं।

शंकर तो इस समय किस ट्रेन से आये हो!

राजेश ट्रेन! वह तो लाइन ही टट गई है। मैं तो स्टीमर से आया हूँ। डूबते-डूबते बच कर!

शीला इस बाढ में आप नदी पार करके आए है! सचमुच आप वैसे ही है, जैसा ये बताते थे।

राजेश क्यों शंकर, क्या बताते थे भाभी से!

शंकर अरे! ये तुम्हारी भाभी तो तुम्हें देखने को वैसे ही आकुल थी जैसे बच्चे ऊदबिलाव देखने के लिए आकुल रहते है। और नदी से आपको प्रेम भी उतना ही है। भला बताइए, नदी के रास्ते से आए है! (शीला से) सुनो। चाय चढा दो जल्दी से। (शीला जाती है) तो आप नदी के रास्ते से आए है!

राजेश करता क्या? दो साल से आने को सोच रहा था। जब से युनिवर्सिटी छूटी तुमसे भेट ही नही हुई।

शंकर मै तो कनवोकेशन मे इसीलिए गया, पर तुम वहाँ भी गायब।

राजेश (गहरी साँस लेकर) क्या करूँ। पता नही क्या हो गया मुझे? इसी दो साल के अरसे मे जिन्दगी मुझे कहाँ से कहाँ ले गई। और इस समय भी इतना परेशान होकर भागा हूँ। मन पर जैसे हजारो हथौडे एक साथ चलते हो। अक्सर तो यहाँ तक सोचा कि मर जाऊँ, फुरसत मिले। पर आग के बिस्तरे पर न इस करवट चैन, न उस करवट।

शंकर क्यों ! आखिर यह तुम्हें हो क्या गया है। न ठहाके, न लतीफे। जाने कहाँ की निराशा लाद ली है। बैठो तो। टहल क्यों रहे हो।

राजेश नहीं। बैठेंगे नहीं। टहलने दो। तुम समझते नहीं शंकर। मुझसे क्षण भर भी बैठा नहीं जाता। लगता है जैसे नस-नस में लाखों तूफान घुट रहे हों और उनके बहने का कोई रास्ता नहीं मिलता। जैसे व्यक्तित्व का रेशा-रेशा बिखर रहा हो।

शंकर लेकिन क्यों ?

राजेश पता नहीं क्यों। पता नहीं क्यों जी रहा हूँ। कोई अर्थ नहीं मेरे जीने का।

शंकर (गहरी साँस लेकर) तुम भी ऐसे हो जाओगे राजेश यह मैं कभी नहीं सोच पाता था। भावुक मैं था। जिन्दगी ने मुझे ठीक कर दिया, और तुम जो अपने मन को कितना बाँध कर रखते थे.....

राजेश हाँ दोस्त। लेकिन मन की नदी का बाँध फूट ही गया। और फिर तो इतनी भयानक बाढ आई कि जाने कितनी मान्यताएँ टूट गईं, कितने संस्कार उखड़ गए, और धार इतनी तेज थी मित्र, कि पाँव तले की धरती तक बह गई। न पाँव तले रेत, न सर पर आकाश...जाने किस दुनियाँ में यह खूँखार नदी खींच लाई है और न जाने क्या करने पर तुली है...

महसा गीत जो कुछ देर से पृष्ठभूमि में दूर से सुन पड़ता था, स्पष्ट हो जाता है, शंकर, राजेश के स्वर उसमें डूब जाते हैं...

हाय बाढ़ी नदिया, जिया लैके माने
दाया न जाने, माया न जाने, जिया लैके माने, जिया लैके माने,
हाय बाढी नदिया।

बाहर से स्वर---बहू जी ! नदी भवानी के भीख मिलै ।

शीला (अन्दर से) अच्छा । (मुट्ठी मे कुछ लेकर आती है)

राजेश ये क्या है भाभी ?

शंकर चना है । हर घर मे ये लोग चने की भीख माँगते है ।

राजेश क्यो ?

शीला बकरे को खिलायेगे । नदी बढी है न । ये सब बकरे को नदी किनारे ले जा कर बलि चढायेगे और ताज़ा खून जल पर छिड़केंगे । तभी नदी घटेगी ।

राजेश यह सच है शंकर ।

शंकर हाँ पहले हम लोगो को भी यकीन नही था । अब तो कई साल तक अपनी आख से देख चुके है ।

शीला लेकिन कभी-कभी इससे भी जल नही घटता । देवी के मन्दिर तक जल चढ जाता है, मन्दिर डूबने लगता है, तब कस्बे का कोई आदमी डूब कर आत्महत्या कर लेता है और जल उतर जाता है ।

गीत का स्वर दूर जाते हुए---

हे देवी मेया तोहार हम बालक राखहु हमरा धेयान ।
तोका चढ़उबै नरियर बतासा, चढ़उबै पाठा जवान !....

राजेश सच !

शीला और क्या । त्योरस्साल एक पागल डूब गया था । पारसाल एक औरत ने खुदकुशी कर ली । उसकी तो लाश ही लेकर नदी पीछे सिमट गई । (क्षण भर सन्नाटा) चाय वाय यही पियेंगे । ?

शंकर नही अन्दर मेज लगा दो । (शीला जाती है) (सन्नाटा ।

कभी-कभी गीत हवा में बह आता है) राजेश ! क्या सोच रहे हो ।

राजेश कुछ नहीं । बलि का बकरा ! सोच रहा हूँ जिन्दगी कितनी खूँखार है । हर जगह एक सी है शंकर । कहीं चैन नहीं लेने देती । वहाँ से भाग कर यहाँ आया था कि कुछ चैन मिलेगी । ये लोग हैं । कितनी खुशी से मासूम जानवर को जिबह करने ले जा रहे हैं । हर जगह यही होता है । गाते-बजाते हुये जिन्दगी अपने शिकार को ले जाती है, उसका खून लहरों पर छिटकने के लिये । एक शिकार मैं हूँ । लेकिन मैंने सोचा था मरूँगा नहीं, यहाँ आकर मन को ताजा करूँगा (दाँत पीस कर) लेकिन नहीं जिन्दगी का शिकंजा तो हर जगह खून का प्यासा है । (गीत फिर सुन पड़ता है ।) देखो । जिन्दगी बार-बार बुलाती है । यह खूनी पुकार यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ती । मैं मरना नहीं चाहता शंकर (अस्फुट चीख से) मगर इस आवाज से पीछा छुड़ाओ ।

शंकर पागल हो गये हो राजेश । लो मैं खिड़की बन्द किये देता हूं । अब आवाज नहीं आयेगी । आखिर कुछ बताओगे तुम्हें हुआ क्या है ?

राजेश बताएंगे मित्र । कुछ दिन चुपचाप आराम करने दो ।

शंकर खूब आराम करो । किताबें पढ़ो । पूरी आलमारी भरी है ।

राजेश हाँ किताबें तो हैं (मेज पर से किताबें उठाता हुआ) टेनीसन, टेस आ' डरबरविले, कामायनी । अच्छा टैलकम पाउडर भी इसी के साथ ! (चित्र उठाता है, देख कर उल्टा रख देता है) ये तुम्हारी किताबें हैं ?

शंकर नहीं ! पद्मा की । मेरी छोटी साली है । उसी की यह फोटो भी

है। आजकल शीला के पास आई हुई है। शीला! पद्मा कहाँ गई है ?

शीला (अन्दर से) वहीं गई है, डाक्टर साहब के यहाँ।

शंकर मेरे दोस्त हैं डा० कृष्णस्वरूप सारस्वत। उनके यहाँ पद्मा भी चली जाती है। करे क्या दिन भर पड़ी-पड़ी ? अब तुम आ गये हो। तुम्ही से मगज-पच्ची किया करेगी।

शीला चलिये चाय तैयार है। लेकिन पद्मा अभी तक नहीं आई, पता नहीं कब तक आएगी।

शंकर अब आ ही रही होगी। मैं तो कहता हूं कर दो दोनों की शादी, कुछ हम लोगों को भी पद्मा की बाढ़ से रिलीफ मिले।

शीला चलो। तुम तो मजाक करते हो। मुझे तो दोनों की जोड़ी बड़ी अच्छी लगती है। मैंने तो कल चाचा जी को लिख भी दिया है। चलिए अन्दर चाय ठंढी हो रही है।

सब अन्दर जाते हैं। क्षण भर स्टेज खाली रहता है। फिर बाँई ओर से डा० कृष्णा और पद्मा आते हैं। डा० कृष्णा पेंट और कमीज पहने हैं। पद्मा लापरवाही से उल्टा-पल्टा डाले हैं। देह पर तरुणाई, आँखों में बचपन, बातों में मिसरी, चाल में अल्हड़पन।

पास से कुर्सी खींचकर पलंग के पास डाल देती है और बन्द खिड़की खोल देती है। फिर डाक्टर का कन्धा पकड़कर कुर्सी पर बिठाल देती है।

पद्मा लो बैठो। आज दीदी और जीजा गये हैं स्टेशन, अपने एक दोस्त को रिसीव करने। सुना है कि बड़े लेखक हैं।

कृष्णा लेकिन मुझे देर हो रही है। आज बाढ़-रिलीफ कमेटी की मीटिंग है। मैं उसका सेक्रेटरी हूँ न।

पद्मा तो क्या करते हो तुम लोग ?

कृष्णा बाढ़-पीड़ितों की सहायता। जो लोग बेघरबार हो गये हैं उनकी मदद। जो बाढ़ में फँस गये हैं उन्हें निकालना।

पद्मा अहा! हा! तुम तो खूब निकालते होगे। जरा से पानी में तो उतरा नहीं जाता, तुम किसी को बाढ़ में से क्या निकालोगे!

कृष्णा मैं तैरना जानता हूँ पद्मा! तुम्हें यकीन नहीं। आजकल भी भरी नदी में कूद जाऊँ तो डूब नहीं सकता।

पद्मा और अगर कोई ऐसी धार में उलझा हो कि डूबकर ही उसे बचा सकते हो तो? तो क्या करोगे?

कृष्णा डूब ही जाऊँगा तो बचाऊँगा कैसे? तुम तो बच्चों की सी बातें करती हो।

पद्मा यही तो तुम नहीं समझते डाक्टर साहब! कैसे बताएँ तुम्हें कि बिना डूबे तुम बचा ही नहीं सकते?

कृष्णा किसे?

पद्मा किसी को भी! मसलन मुझे......

कृष्णा (हँस पड़ता है। पद्मा के आँचल का छोर अपनी अँगुली में लपेटते हुए) तुमने इतनी बात करना कहाँ से सीखा है? डाक्टरी पढ़ने से बड़ा नुकसान रहता है। मुझे भी लिटरेचर पढ़ा दो तो कम से कम तुमसे बात तो कर सकूँ। तुम कितनी कुशल हो बात करने में।

पद्मा (लजा जाती है) धत्! —अरे यह मेरी फोटो किसने उलटी रख दी है। (उठकर ठीक करती है) और यह अटैची किसकी पड़ी है? (नाम पढ़ती है) राजेश वर्मा! अच्छा आ गये ये लोग।

कृष्णा कौन लोग? क्या शंकर आ गये? अच्छा तो उनसे भी चन्दा ले लूँ रिलीफ का, और चलूँ फिर।

पद्मा अरे बैठो भी। हमारे पास एक मिनट भी बैठते भारी लगता है। हमसे चन्दा नहीं माँगा तुमने।

कृष्णा तुमसे मदद माँगूँगा, चन्दा नहीं। मेरे साथ चलो। तमाम औरतें बेसरबार मदद के लिए पड़ी हैं।

पद्मा न बाबा। मुझे उनकी हालत देखकर बड़ी रुलाई आती है। अभी उस दिन बाढ़ देखने गई, रोते-रोते आँख सूज गई। हमारी आँखें बड़ी कमजोर हो गई हैं कृष्णा! एक चश्मा दिला दो ना।

कृष्णा (अनमना सा) अच्छा।

पद्मा और हाँ, तुम्हें एक बात बताऊँ (कृष्णा घड़ी देखता है) अरे बैठो भी—(कान के पास मुँह लाकर धीमे से) कल जीजी ने चाचा के पास तुम्हारे बारे में चिट्ठी लिखी है। और तो सब ठीक है लेकिन हम लोग सारस्वत हैं और तुम लोग कक्कड़...

कृष्णा (क्षण भर पद्मा की ओर देखता है—फिर हाथ होठों से लगा कर) हम लोग कितने सुखी होंगे पद्मा। यह ठीक है कि मैं तुम्हारी तरह भावुक नहीं, इन्टलेक्चुअल नहीं, लेकिन हम लोग एक दूसरे की कमी पूरी करेंगे।

पद्मा (बहुत मुलायम स्वरों में) हाँ कृष्णा, मैं कविताओं में डूबी रहती हूँ, मगर कवियों से, लेखकों से, मुझे डर लगता है। एक-तिहाई तो इनमें से भिखारी होते हैं, एक-तिहाई पागल और एक-तिहाई.....

कृष्णा सखी सम्प्रदाय के। (दोनों हँसते हैं) नहीं एक बात तो है...कभी-कभी कविताओं के मीनिंग मुझे अच्छे लगते हैं। साल भर पहले मैंने भी सोचा था कि कविता बनाऊँ, फिर सोचा उससे मेरे पेशे में नुकसान पहुँचेगा और उसके बाद मिल

गईं तुम—बजातखुद कविता (पद्मा का आँचल अँगुलियों पर लपेटने लगता है)

पद्मा (जल्दी से आँचल खींचकर) छोड़ो जीजा जी आ रहे हैं।

शंकर और राजेश बाहर से दोनों बहस करते हुए आते हैं।

राजेश और इसलिये कभी-कभी लगता है कि आदमी को पत्थर होना चाहिए, फौलाद की राक्षसी मशीन होनी चाहिये जो अपने बाहु-चक्रों में सभी को कुचल दे। उसके बिना आदमी जिन्दा नहीं रह सकता। कभी-कभी मन में एक भयंकर खूनी प्यास जागती है जिन्दगी से बदला लेने की, मगर दोस्त! प्यार ने यह भी साहस तोड़ दिया है। जहाँ ख्याल आता है कि इस चक्र में वह भी पिस जायगी जिसे मैंने ईश्वर से बढ़कर माना है, जो आज मुझसे दूर हो गई है तो क्या हुआ, तभी ऐसा लगने लगता है कि मुझमें हिलने तक की ताकत नहीं। मेरा सब कुछ छिन गया (पद्मा और कृष्णा एक दूसरे की ओर देखते हैं.....) अब मेरे लिए जिन्दगी का क्या अर्थ है। मैं किसके लिए जिन्दा रहूँ, क्यों जिन्दा रहूँ? फिर सोचता हूँ क्यों मरूँ? जिन्दगी ने फूल बनकर न रहने दिया तो काँटा बनकर रहूँ .. लेकिन रहूँ जरूर! (पद्मा और कृष्णा को देखकर चुप हो जाता है)

शंकर आओ तुम्हारा परिचय करा दें—ये हैं राजेश। तुम दोनों इनके बारे में सुन चुके हो। ये हैं पद्मा, ये हैं डा० कृष्ण स्वरूप कक्कड़—(झुककर धीमे से) पद्मा के भावी पति, और कल से यही तुम्हारा इलाज करेंगे। कृष्णा इन्हें कुछ-कुछ हार्ट-ट्रबुल है। और अब महीने भर रह कर इन्हें स्वास्थ्य सुधारना है यहाँ।

कृष्णा बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर।

राजेश मैं ऐसा आदमी नहीं जिससे मिलकर किसी को खुशी हो डाक्टर।

शंकर नहीं ! वह व्यापार की दृष्टि से कह रहे थे। उन्हें एक मरीज मिला, क्यों !

सब हँस पड़ते हैं, शीला हाथ में स्वेटर और सलाई लिये आती है।

शीला अरे भई, इतना मत हँसो। अहा कृष्णा है !

कृष्णा भाभी तुमसे कुछ वसूलने आया हूँ।

शीला देखो, अभी घबराए क्यों जाते हो डाक्टर साहब। हमने नुस्खा लिखा है। दवा तैयार हो जाय।

पद्मा शरमा जाती है। कृष्णा भी झेंप जाता है, लेकिन चन्दे की कापी निकालता है।

कृष्णा लिखो।

शंकर यह क्या है भाई, कुछ हमें भी मालूम होगा ?

कृष्णा बाढ़-रिलीफ-कमेटी का चन्दा। (कापी राजेश की ओर बढ़ा कर) कुछ आप !

राजेश (कापी हाथ में लेकर और लाइनें लिखकर हस्ताक्षर कर देता है) देखो शंकर मैंने क्या लिखा है—"जब आदमी के सामने जिन्दगी की दिशाएँ धुंधली पड़ जाएँ, जब वह अपनी जिन्दगी के सही-सही अर्थ न खोज सके तो उसका जिन्दा रहना उसका अहंकार और कायरता है। उसे आत्महत्या कर लेनी चाहिए--राजेश !" (सब अचरज से देखते हैं—)

शंकर अरे यह चंदे की रसीद है राजे, आटोग्राफ बुक नहीं।

पद्मा आँचल में मुँह दबाकर हँसती है। शीला खिलखिला पड़ती है। शंकर आँख से दोनों को मना करता है।

कृष्णा मुझे सदेश नही चाहिए। मुझे चन्दा चाहिए।

राजेश ओ आइ ऐम सारी! काहे का चन्दा।

कृष्णा बाढ़-रिलीफ का।

राजेश क्यो ?

कृष्णा क्यो ? उससे हम बाढ़ मे मरने वालो को बचायेगे।

राजेश लेकिन क्यो बचायेंगे उन्हें ?

पद्मा तो क्या उन्हें मरने दिया जाय ?

राजेश बेशक! कितना बडा दम्भ है। हम घास-फूस के छप्परो को बह जाने देते है। ढोर-ढगर को बह जाने देते है। आदमियो को बचाने के लिए चन्दा करते है। क्यो! क्या ये आदमी घास-फूस और ढोर-ढंगर से किसी माने मे बेहतर होते है? कभी नही डाक्टर। ये लोग कीडो से भी बदतर होते है। इनका जिन्दा रहना दुनिया के लिए अभिशाप है और इनके लिए यातना। फिर इन्हे क्यो न मरने दिया जाय। मै जब कभी सोचता हूँ कि इस धरती पर करोडो आदमीनुमा कीडे रेंगते है और नारकी जिन्दगी बिताते है तो मेरा मन गुस्सा और तरस से भर जाता है। ये, हम सब, क्या है हमारी जिन्दगी के माने? करोडो साल से हम लोग सितारो की छाँह मे धरती पर अपने पद-चिन्ह बनाते हुए चले आये है। मगर है हम सब भी कीडे के कीडे। हमारा अस्तित्व मिट जाय तभी अच्छा हो। मुझे तो अफसोस है कि ये बाढ़े इतनी कम क्यो आती है? मनु के जमाने का जल प्रलय क्यो नहीं आता है! इन्सान की जिन्दगी का नाम-निशान क्यो नहीं खत्म हो जाता? कीडे? ये सब मरने के ही लिए बने है।

शीला तो क्या दया और सहानुभूति कुछ भी नही है? राजेश बाबू आप क्या कह रहे है?

कृष्णा दिस इज ब्रूटिश।

राजेश तो क्या दया कम ब्रूटिश होती है डाक्टर साहब ! अभी उस बलि के बकरे को देखा था। दया तो हमारे व्यवहार का महज वह अंश है जिसमें हम बकरे को फूल-माला से लादते रहते है। डाक्टर साहब ! हमारे दो चेहरे हैं। एक जो हम दुनिया को दिखाते है, वह है दया, ममता, स्नेह, प्रेम का चेहरा; एक वह जो हम खुद देखते है, वह है क्रूरता, घृणा, हिंसा, प्रतिशोध का चेहरा और यही जिन्दगी की असलियत है मेरे दोस्त ! दया करके, प्रेम करके, हम हमेशा जिन्दगी की असली कुरूपता को ढँकने की कोशिश करते रहे है। यह गलत है। असलियत यह है कि जिन्दगी क्रूर है, जिन्दगी कुरूप है, घिनौनी है और आदमी उसे बदल नही सकता। आदमी को मर जाना चाहिए। खत्म हो जाना चाहिए।

शंकर यह फिलासफी की बात दूर—आओ तुम्हारे नाम मे चन्दा लिख दूँ।

राजेश चन्दा—यही लाइनें मेरा चन्दा है। यह तो रसीद बुक है। यह मै आग की लपटों पर लिख सकता हूँ, पानी की लहरो पर लिख सकता हूँ, आसमान के बादलों पर यही लिख सकता हुँ। यही जीवन का ध्रुव सत्य है। कह दो आदमियत से वह मर जाय। चूँकि आज तक उसकी दिशाएँ अस्पष्ट है, धुँधली है। छिः ! (उसी आवेश में) मैं बाथरूम जा रहा हूँ नहाऊँगा मै। अन्दर जैसे भट्ठी सुलग रही हो।

चला जाता है।

शंकर कृष्णा, कल इन्हें इक्जामिन करो जरा। जानते हो यह बडे अच्छे लेखक है।

कृष्णा हिन्दी के न ? तभी ये न्यूराटिक है। मानसिक रोग है शंकर भइया !

पद्मा रोग नहीं, बहुत गम्भीर बात कहते हैं ये। मैं तो जैसे बह गई थी।

कृष्णा आश्चर्य से पद्मा की ओर देखता है, वह लजा जाती है।

कृष्णा अच्छा कल देखूँगा इन्हें। अब जरा रिलीफ-कमेटी की मीटिंग में जाना है।

शंकर क्या हालत है बाढ़ की।

पद्मा सब जगह पानी भर गया है जीजा। देवी के मन्दिर पर भी पानी आ रहा है। इस साल फिर कोई बेचारा डूबेगा।

कृष्णा वाहियात ! महज अन्ध-विश्वास है। हाँ शंकर भइया, इनमें बड़ी आत्मघाती प्रवृत्तियाँ हैं। जरा सम्हाल कर रखना...

शीला घबड़ाई हुई आती है।

शीला सुनते हो, उन्हें दिल का दौरा फिर आ गया है।

सब अन्दर जाते हैं।

पर्दा गिरता है।

दृश्य २

दो सप्ताह बाद अपने कमरे में बैठी हुई पद्मा मुसम्मी निचोड़ रही है। उसका चेहरा क्लान्त है और बाल बिखरे हुए हैं। मुद्रा गंभीर और चिन्तामग्न है। अन्दर से कृष्णा आता है। हाथ में स्टेथेस्कोप और सूटकेस, साथ में शंकर।

पद्मा क्यो, क्या रीडिंग है ?

कृष्णा बहुत अच्छी है तबियत अब तो। दस दिन मे आधा मर्ज चला गया।

शंकर इसका सेहरा तो पद्मा के सिर बँधना चाहिए। उसने दिन-रात एक कर दिया कृष्णा ! मै नही समझता था कि ये इतनी सुश्रूषा कर सकती है।

पद्मा अरे जीजा, इतनी तारीफ न करो नजर लग जायगी ! हाँ तो कृष्णा तुमने कुछ एनालाइज किया।

कृष्णा हाँ बताते है अभी, शकर भइया। उन्हें आप इसी कमरे मे ले आइये। उसका वातावरण बहुत मनहूस है।

शंकर जाता है।

पद्मा हाँ तो बताओ कृष्णा।

कृष्णा डाक्टर से ज्यादा तो शायद तुम मरीज के बारे में जानने के लिए आतुर हो (गहरी साँस लेकर) दस दिन में जिन्दगी का चक्र कितना घूम गया है पद्मा !

पद्मा कृष्णा, कृष्णा ! बोली न बोला करो। तुम्हारा मन इतना छोटा है, यह मैं नही जानती थी।

कृष्णा तुम्हारा मन इतना अस्थिर है, यह मैं नही जानता था पद्मा ! इन दस दिनो में जैसे दुनिया बदल गई है। मेरा सब कुछ खो गया पद्मा। अब तुम्हें मेरे बारे मे कोई दिलचस्पी ही नही रही। वह न्यूरोटिक, आत्मघाती तुम्हारे लिए सब कुछ हो गया।

पद्मा कृष्णा, कृष्णा ! इस तरह की बातें सुनने की मैं आदी नही। वह कुछ भी हो मैं उन्हे श्रद्धा करती हूँ, ममता करती हूँ, प्रेम.....(रुक जाती है)

कृष्णा प्रेम करती हूँ ! कहो न ! आखिर हो न औरत ! बदलते देर नही लगती।

पद्मा आखिर हो न पुरुष ! अधिकार की प्यास जायगी थोडे। ब्याह हो गया होता तो जाने क्या करते—(कृष्णा स्तब्ध रह जाता है—एक टक पद्मा की ओर देखता है, धीरे-धीरे कुर्सी पर बैठ जाता है। माथे पर हाथ रख कर, सोचने लगता है। पद्मा उठती है और धीरे-धीरे कुर्सी के पीछे खड़ी हो जाती है। बालों मे उँगलियाँ डालकर—) नाराज हो गए कृष्णा ! (चुप रहता है—कन्धा झकझोर कर) बोलो ! सचमुच मैं अपने को समझ नहीं पाती कृष्णा, मुझे क्या हो गया है। मैं जानती हूँ तुम्हारे मन मे मेरे लिए क्या है, लेकिन क्या करूँ कृष्णा। उनके मन के दर्द को जिस दिन पहचाना है उस दिन से जैसे उसने मन को बाँध लिया है। लगता है जैसे उनके दर्द का एक ज़र्रा मेरे सारे व्यक्तित्व, सारे प्रेम से बडा है। मेरा प्रेम अब भी तुम्हारे लिए है, लेकिन लगता है यदि उनके दर्द में ज़रा सी

कमी हो सके तो मेरा सारा व्यक्तित्व सार्थक हो जाय। यकीन मानो कृष्णा मैं उन्हे प्यार नही करती। उनकी आँखो में इतनी अँधेरी गहराइयाँ है कि उनमे झाँकते हुए मुझे डर लगता है, लेकिन जाने कैसा जहरीला जादू है उनमे कि डूब जाती हूँ। मुझे खुद अपने ऊपर बडा गुस्सा आता है और जब वह मुझ से नहीं सम्हल पाता तो तुम पर उतर जाता है कृष्णा ! . बोलो. ..(कृष्णा केवल आँख उठा कर देखता है और चुपचाप सर नीचे कर लेता है) माफ कर दो कृष्णा। थोडे दिन मे तो वे यहाँ से चले जायँगे, तब तक उनकी सेवा कर लेने दो। मुझे लगता है कि ..

कृष्णा मै जानता हूं मै बहुत नीरस हूँ पद्मा। तुम्हारे योग्य नही। लेकिन, मै क्या करूँ। अगर मेरी जिन्दगी मे कोई है जिसकी वजह से मैंने कुछ ऊँचाई पाई है तो वह तुम हो लेकिन खैर .....

पद्मा तुम्हारी इसी बात से मेरा मन भर आता है ! (एक आँसू टप से गिर पडता है, गला भर आता है) मै क्या करूँ ? (रोने लगती है ।)

कृष्णा अरे रोओ मत। बंठो ! आँसू पोछो। तुम जैसी भी हो मुझे स्वीकार हो पद्मा ! काश कि तुम समझ पाती...लेकिन खैर जाने दो। आओ बताएँ उन्होने क्या बताया। आँसू पोछ डालो...हँसो...हाँ ऐसे...तुम्हे मालूम है ? वे इसलिये इतने निराश है, इसलिये आत्महत्या करना चाहते है कि वह लडकी उन्हे मिल न सकी जिसे वह.....

पद्मा (चीख कर) छि: कृष्णा, उन्हे इतने नीचे न घसीटो।

कृष्णा (कडए स्वर मे) तो तुम्हारी पूजा से वह ऊँचे ता हो नही जायँगे।

पद्मा (और भी कड़ुए स्वर में) तुम्हारी व्याख्या से वह नीचे तो गिरेंगे नहीं। बेवकूफ मत बनाओ मुझे। उन्होंने तुमसे पहले मुझे बता दिया है, सब बता दिया है। उन्होंने बताया है कि उन्होंने और कामिनी ने निश्चय किया था कि वे जीवन भर अलग रहेंगे, प्रतिदान न लेंगे। मगर अपने प्यार से दोनों एक दूसरे का व्यक्तित्व सम्हालते चलेंगे। पर अब कामिनी धीरे-धीरे मुर्झा रही है और वह रोक नहीं पाते...उनके सामने जीवन का एक अर्थ था। और अब उनका जीवन निरर्थक है। वह जिन्दा नहीं रहना चाहते...कितनी गहराई से सोचते हैं वह कृष्णा! तुम समझ नहीं सकते।

कृष्णा तुम तो समझती हो।

पद्मा हाँ समझती हूँ। और तुम्हारे इस तरह बोलने से मैं डर नहीं जाऊँगी। तुम उनके पैरों की धूल भी नहीं हो। तुम इस ऊँचाई से सोच भी नहीं सकते।

कृष्णा कभी नहीं सोच सकता। ईश्वर न करे मैं वहाँ से सोचूँ। औरत जो एक शाम को बदल सकती है, उस औरत के पीछे मैं आत्महत्या नहीं कर सकता। छिः .....

तेजी से निकल जाता है।

पद्मा कृष्णा! कृष्णा...सुनो। उफ मुझे क्या हो गया है। (मेज पर सिर रख कर रोने लगती है—दाईं ओर से शंकर का सहारा लिए हुए राजेश आता है)

शंकर पद्मा! जरा कुर्सी खिड़की के पास डाल दो।

पद्मा जल्दी से आँख पोंछकर उठती है, और कुर्सी डाल देती है। राजेश बैठ जाता है। शंकर उसके पैरों पर चादर डाल देता है। पद्मा मुसम्मी का रस लाकर देती है।

शंकर अच्छा मै डिस्पेन्सरी जाकर दवा ले आऊँ। शीला ! ओ शीला ! जरा शीशी दे जाना.....पद्मा, तुम्हारी आँख क्यों लाल है ?

पद्मा सर मे दर्द है जीजा ।

राजेश मेरी वजह से अगर सब से ज्यादा मेज़बानी किसी पर लदी तो इन पर। मुर्दे को लोग मरने भी तो नही देते।

पद्मा मरें आपके दुश्मन। आपके बिना हमारे जीजा नही विधवा हो जायेंगे ।

शंकर और राजेश हँसते है--शीला लाकर शीशी देती है--शंकर लेकर जाता है।

राजेश बैठो भाभी ।

शीला दूध चढ़ा आई हूं, उतार आऊँ।

पद्मा अरे बैठो भी दीदी। (हाथ पकड कर बिठा लेती है)

शीला राजेश बाबू ! अब शादी कर लो तुम। ये सब तो हर एक की जिन्दगी मे होता है। शादी कर लो। बिखरा हुआ मन बँध जायगा और धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा ।

राजेश (हाथ जोड कर) क्षमा करो भाभी। क्या इतना प्रायश्चित्त काफी नही है ?

पद्मा अच्छा तो है राजेश बाबू, शादी कर लीजिये, इतना डरते क्यो है ?

राजेश डरते क्यो है ? बुरा न मानना, मैंने सुना था अफ्रीका मे एक नरभक्षी पेड होता है। जहाँ कोई उसके समीप गया कि उसके पत्ते उसे झुककर लपेट लेते है। और उसके बाद वह अपने जहरीले रेशमी काँटों से बूँद-बूँद खून चूस कर हड्डियाँ फेंक देते है। औरत भी बिल्कुल ऐसी ही है। किसी भी जीनियस को देखते ही वह अपनी बाँहों में कस लेती है और फिर व्यक्तित्व को बूँद-बूँद चूस कर उसे फेंक देती है।

शीला अच्छा तो इसके मतलब तुम्हारे मित्र का व्यक्तित्व मैंने खत्म कर दिया है। जाइये, जनाब, मैं न होती तो.....

पद्मा अरे दीदी, वह जीनियस की बात कर रहे है! जीजा कहाँ के जीनियस थे ? (राजेश और शीला हँस पड़ते है)

शीला तो यह किसी जीनियस लड़की से शादी कर ले।

राजेश जीनियस और लड़की। यह सर्वथा अन्तर्विरोध है। औरत जीनियस हो ही नहीं सकती। उसके लिये जिन्दगी का वाह्य सब से प्रमुख होता है। कामिनी के ही बारे में मैंने आपको बताया था। वाह्य परिस्थितियाँ उसके अन्तर के सौन्दर्य को नष्ट कर रही है और वह चुपचाप है। यह कोई प्रतिभा है। प्रतिभा विद्रोह करती है, सृजन करती है। नारी केवल प्रसव करती है या प्रसाधन, प्रसव की भूमिका...क्षमा कीजियेगा। यही है पद्मा। इनकी मेज पर कामायनी रक्खी है। लेकिन कामायनी के ऊपर क्या है ? पाउडर का डिब्बा।

शीला (सहसा चौंक कर) दूध जल रहा है। मै अभी आई।

चली जाती है, पद्मा उठती है और पाउडर का डिब्बा उठाकर फेंक देती है। राजेश चौंक जाता है।

राजेश अरे यह क्या ? आप बुरा मान गई। मैंने तो उदाहरण दिया था। मै क्या आपको समझता नही हूँ!

पद्मा समझते है आप! खूब समझते है। जहाँ नारी दुर्बल है, कमजोर है, वहाँ उसे गाली दे लीजिये, लेकिन जहाँ वह ममता दे देती है, अपना सब कुछ दे देती है, वहाँ भी आप लोग कहने से नही चूकते।

राजेश गलत समझी आप पद्मा जी। आपको क्या मैंने समझा नही! आप ही ने तो मेरी जान बचाई है।

पद्मा देखिये आप होंगे आप ! मैं तो तुम हूँ !

राजेश (गहरी साँस लेकर) तुम सही पद्मा। लेकिन तुम इतनी ममता से बात न किया करो ! तुम नहीं समझती कि प्यार न मिलने से मन मे एक घाव होता है, लेकिन एक घाव और होता है जो प्यार मिलने से बुरी तरह कसक उठता है। तुम क्यों, क्यो इतनी ममता बढा रही हो ?

पद्मा पता नही क्यो। मैं खुद नही समझ पाती। जाने कैसा मन्त्र सा छा गया है मुझ पर। लगता है जैसे मैं आपे मे नही हूँ।

राजेश लेकिन यह बुरी बात है।

पद्मा जानती हूँ यह गलत बात है, फिर भी आप कभी नही समझ सकते आप मेरे लिये क्या हो गये है। लगता है मेरी जिन्दगी का अर्थ मेरे सामने खुल गया है। कोई छाया थी जो बार-बार सपनो मे आती थी। मैं पुकारती रहती थी, वह चली जाती थी, आपको पाकर मैं उस छाया को पा गई हूँ।

राजेश (आवेश से) पद्मा। क्या कह रही हो तुम ?

पद्मा कह लेने दीजिए मुझे। फिर कभी न कहूँगी, लेकिन जो कुछ कह रही हूँ वह अक्षर-अक्षर सही है, मैं आज तक कविताएँ गाती थी। आप को पाकर उन गीतो की आत्मा पा गई हूँ। आपको खुद नही मालूम कि आते ही आपने क्या किया था। आते ही मेरा चित्र उलट दिया था ! मेरा व्यक्तित्व उलट दिया था; बताइये क्यो किया था आपने ? क्यो ? क्यों आपने उन गहराइयों में उतार दिया, जहाँ आपके सिवा कोई नही है ?

राजेश लेकिन पद्मा.....डाक्टर ?

पद्मा मैं स्वयं नही जानती उनके लिये क्या करूँ। आज लगता है

जैसे वे मेरे प्यार की पगडण्डी थे, जिसे मै छोड आई हूँ। आप मंजिल है जहाँ मै पहुँचना चाहती हूँ।

सहसा शीला का प्रवेश।

शीला पद्मा ! जरा जाकर धोबी को कपडे दे आओ ! जल्दी जाओ। (पद्मा जाती है) राजेश बाबु, आज शाम को नाश्ते के लिये क्या बनाऊँ ?

राजेश (गम्भीर विचार मे) कुछ नही ! चाहे जो बना दो।

शीला मूँग का हलुआ अच्छा लगता है। (राजेश स्वीकृति मे सिर हिला देता है।)

डाक्टर आता है, अस्त-व्यस्त !

कृष्णा भाभी इनसे कुछ बाते करनी है एकान्त मे अगर ...

शीला हाँ, हाँ। मै जाती हूँ। (जाती है)

राजेश (उत्सुकता से डाक्टर की ओर देखता है) क्या है डाक्टर ?

कृष्णा (कुछ देर चुप रहकर) राजेश बाबू (बहुत कडे स्वर मे) मैने तुम्हारी जान बचाई है—और .... और तुमने .... (सहसा धीमे पड कर गहरी साँस लेकर) लेकिन जाने दो मुझे यह कहना भी उचित नही है। लेकिन मै तुम्हे ऐसा नही समझता था। (सहसा तेज होकर) लेकिन तम चुप रहो जैसे कुछ जानते ही नही, तुम चुप रह कर . .

राजेश लेकिन मेरा क्या दोष ?

कृष्णा तुम्हारा क्या दोष ? दोष है तुम्हारी उल्टी-सीधी बातो का, जिनमें आदमियो को बेहोश बनाने का नशा है। माना मुझ मे इन्टेलेक्ट नही है। मै लच्छेदार बाते नही कर पाता, मेरे व्यक्तित्व मे आग नही, इसके मतलब यह नही कि मेरा सब कुछ छिन जाय। तुमने यह काँटे बोए है, तुमने यह जहर

घोला है । जहर....जानते हो. . मै सब कुछ खोकर भी स्वयं नहीं मरूँगा.... लेकिन यह देखते हो.... (बैग मे एक शीशी निकाल कर) दवा में इसकी एक बूँद तुम्हारे लिये काफी है.. . मै नष्ट होना नही जानता, मै कायर नहीं हूँ...

राजेश (हाथ बढ़ाकर) कितने मेहरबान हो कृष्णा तुम । इसी दवा की तो मुझे तलाश है । काश कि तुम समझ पाते कि कितनी बेचैनी है इस हृदय मे ! कब से मै धधक रहा हूँ । मै खुद तुम लोगो की जिन्दगी के बीच से हट जाना चाहता हूँ । मुझे किसी का मोह नही रहा, जिसे प्राणो से बढ कर प्यार किया जब उसी.. लाओ दो शीशी दो !..

कृष्णा (उठ कर) कभी नहीं, मेरा काम जिलाना है, मै डाक्टर हूँ, मै जहर नहीं दे सकता हूँ, मै दवा देता हूँ (खिडकी के पास जाकर शीशी फेंक देता है, मुड कर पद्मा के चित्र को देख कर) काश कि तुम कभी भी समझ पाती मै जीनियस नही हूँ, मगर तुच्छ भी नहीं हूँ.... (लौट कर, राजेश के कन्धे पर हाथ रख कर) मगर मै क्या करूँ । कोई भी तो मेरे दर्द को नही . .

राजेश (हाथो मे उसके हाथ लेकर) मै समझता हूँ डाक्टर, मै समझता हूँ । मै कितना तुच्छ हूँ । कैसा फूटा नसीब है मेरा कि जो मेरे संसर्ग में आता है उसी को आग लग जाती है । मैं समझता हूँ---मै तुम्हारे रास्ते से हट जाऊँगा । कृष्णा.... .मै समझता हूँ ...

कृष्णा (गमगीन आवाज मे) मुझे कोई नही समझता ... कोई नहीं . .

धीरे-धीरे चला जाता है । राजेश कमरे में टहलने लगता है ।

राजेश जिन्दगी का कुछ अर्थ नही रहा मेरे सामने। एक प्रेतात्मा की तरह जिस वातावरण मे रहता हूँ वही अभिशप्त हो जाता है। मौत मे इतनी तकलीफ तो नहीं होगी, इतनी उलझन तो नही होगी। जिन्दगी तो मुझे नीच साबित करने पर तुली है। अब मुझे जाना ही पडेगा। मुझे कोई नही रोक सकता (मुट्ठी तान कर) कोई नही—दुनिया मेरे लिये बहुत छोटी है, जिन्दगी बहुत मकरी है। (खिडकी से उतर जाता है। उतरने मे पैर लगकर पद्मा की तस्वीर गिर कर टूट जाती है।)

पर्दा गिरता है।

दृश्य ३

वही कमरा--शंकर बेचैनी से टहल रहा है--शीला सर झुकाए बैठी है।

शंकर (सहसा रुक कर) सारी ग़लती तुम्हारी है। मैंने बार-बार कह दिया था कि चाहे आस्मान फट पडे, तुम राजेश को एक मिनट के लिए भी अकेला न छोडना, लेकिन तुमने कभी कहना माना ? तुम समझती हो कि अगर राजेश को कुछ हो गया तो मैं किसी को मुँह दिखला सकूँगा ? (फिर टहलने लगता है)

पद्मा आती है।

पद्मा कुछ पता लगा जीजा।

शंकर कुछ नही ! पुलिस मे रिपोर्ट की, जाल छुडवाया, मल्लाहो से पूछा, स्टेशन पर जाँच की, कहीं से कोई जवाब नही..... (सहसा मुडकर) लाओ कुछ रुपये निकाल लाओ, जब तक ढूढूँगा नही, तब तक वापस नही आऊँगा। (शीला चुपचाप उठकर अन्दर जाती है। शंकर फिर टहलने लगता है। पद्मा एक टक खिडकी के बाहर देखती है, शीला लाकर पर्स देती है। शंकर बाहर जाता है)

शीला (डरते-डरते) कुछ खा तो लो, कल से एक बूँद पानी नहीं डाला मुँह मे।

शंकर खाओ तुम ! मै तो सिर्फ जहर खाऊँगा.....

तेजी से चला जाता है। शीला रोते-रोते अन्दर चली जाती है। पद्मा दरवाजे पर खड़ी होकर शंकर को देखती है, फिर लौट कर पलंग पर गिर जाती है और राजेश की अटैची पर सिर रख कर फूट-फूट कर रोने लगती है। कृष्णा आता है।

कृष्णा कुछ पता लगा ! (पद्मा कुछ जवाब नही देती, वह क्षण भर खडा रहता है, फिर पलंग पर बैठ जाता है। पद्मा के सिर पर हाथ रख कर) पद्मा इतना क्यो रोती हो (गहरी साँस लेकर) धीरज रक्खो.....

पद्मा (सहसा फुफकार उठती है, उसका हाथ झटक कर) दूर रहो छुओ मत मुझे। मुझे सब मालूम है। तुम इतने पशु हो मै नही जानती थी।

कृष्णा मै ?

पद्मा हाँ ! तुम ! तुम ! तुम ! मुझ से छिपो मत, यह देखो, यह खिडकी के पास था (जहर की शीशी देती है) तुम्हारे दवाखाने की है यह, तुम्ही आये थे उस वक्त। मै अभी दीदी को दिखा सकती हूँ। अभी पुलिस को दे सकती हूँ, लेकिन.....(रोने लगती है) मैने तुम्हारा क्या बिगाडा था कृष्णा ? तुमने उन्हे ज़हर पिला दिया। मै उनसे शादी नहीं करती। मगर तुमसे इतना भी बर्दाश्त नही हुआ। फिर तुमने किस कलेजे से यह शीशी दी होगी उन्हे। हत्या ! उफ !

कृष्णा लेकिन पद्मा सुनो तो..... ..

पद्मा (चीख कर) मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ । तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखना चाहती । चले जाओ, अभी चले जाओ । वरना मैं दीदी को बुलाती हूँ.....

कृष्णा क्षण भर रुक कर पद्मा को देखता है। फिर सिर झुका कर चला जाता है, पद्मा रोने लगती है। फिर उठ खड़ी होती है, अपने चित्र के टुकड़े उठाती है और फिर उन सब को फेंक कर बदहवास हो कुर्सी पर बैठ जाती है। थोड़ी देर बाद शंकर आता है, साथ में राजेश है।

शंकर शीला ! शीला ! लो राजेश आ गये ।

पद्मा चौंक पड़ती है, उछल कर पीछे खड़ी हो जाती है, झट से आँसू पोंछती है, आँसू बहने लगते हैं । शीला भागी हुई आती है।

शीला वाह राजेश बाबू । परेशान कर डाला आपने तो । आज न आते तो शायद कल आपके भइया मुझे तलाक दे देते ।

शंकर अरे इसी उम्मीद से तो ये लौट रहे थे कि शायद मैं तलाक दे चुका हूँ ।

पद्मा ये थे कहाँ जीजा ?

शंकर इन्हीं से पूछो । शीला, जल्दी से दूध गर्म करो इनके लिए ।

राजेश लेकिन मैं इसी गाड़ी से घर जाऊँगा ।

पद्मा (सहसा विचित्र स्वर में चौंककर) अरे डाक्टर.....

शंकर हाँ, अरे पहले डाक्टर से सलाह तो ले लो ।

राजेश नहीं मैं रुक नहीं सकता अब, एक दिन भी नहीं ।

शंकर अच्छा ! अच्छा ! मैं खुद नहीं रोकूँगा तुम्हें । कृष्णा से पूछ आऊँ जल्दी से । सुनो पद्मा ! (पद्मा को अलग बुलाकर) इनकी

अटैची ठीक कर दो और शीला से सौ रुपये लेकर रख देना उसमे ?

जाता है।

पद्मा (राजेश से) आप कहाँ चले गये थे ? सब आपको जरा भी ख्याल नहीं है किसी का। आप गये कहाँ थे ?

राजेश अजब सी बात है पद्मा ! विश्वास करोगी ! मै गया था देवी के मन्दिर, डूबने के लिए ! (पद्मा चीख पड़ती है) न चीखो मत। तुम जानती हो, मै कितना ऊब गया था अपने से ! अपनी जिन्दगी एक भार थी मेरे लिए, धीरे-धीरे वह सभी के लिए भार बन गई। सबकी जिन्दगी के बाँध मेरी वजह से टूटने लगे। मै कितना आत्मदंशन बर्दाश्त करता। मैंने निश्चित कर लिया कि अब मेरी मौत ही हर उलझन का इलाज है। किसी को भी तो सुख न दे पाया मै। (उठकर टहलने लगता है)

पद्मा आप बैठे रहिये।

राजेश नही अब मै ठीक हूँ — बिलकुल ठीक—हाँ तो मुझमे उस वक्त जाने कितनी ताकत आ गई। मै देवी के मन्दिर के पास गया। मैंने अपने मन में सोचा था कि बहुत भयानक जगह होगी। लेकिन वह तो बहुत खुशनुमा जगह थी। मन्दिर का सिर्फ गुम्बद चमक रहा था। पीपल और पाकड़ के पेड डूब गये थे। इतनी खामोशी थी चारो ओर कि लगता था हजारो मील से पत्थरो से टकराती, गाँवो को डुबाती हुई यह नदी इन पेडों की छाँह में आकर सो गई है। मैं चुपचाप खडा रहा। कुछ दूर तक पेडो की छाँह से पानी साँवला पड गया था। थोडी देर में सूरज डूबने लगा। सैकडो सिन्दूरी बादल पानी में उतर आये और फूल की तरह धीरे-धीरे

बहने लगे । मै चुपचाप था। पता नही किसने मेरे कदमो की ताकत छीन ली थी। धीरे-धीरे मेरी आँखो से आँसू बहने लगे। मुझे लगा मै क्यो मरना चाहता हूँ। जिन्दगी तो इतनी सुन्दर है, इतनी शान्त है। मुझे जिन्दगी का नया पहलू मिला उस दिन। वह यह कि चाहे ऊपर की सतह मटमैली हो, मगर जिन्दगी की तहो के नीचे गुलाब के बादलो का कारवाँ चलता रहता है। क्रूरता, कुरूपता के नीचे सौन्दर्य है, प्रेम है और सौन्दर्य और प्रेम, कुरूपता और क्रूरता को चीरकर नीचे पैठ जाता है। उसे देखने के लिए महज आँख मे नया सूरज होना चाहिये, पद्मा। (गहरी साँस ले कर) और धीरे-धीरे लगा कि जैसे मन की सारी कटुता, सारी निराशा, सारा अँधेरा, धुलता जा रहा है। लगा कि जब तक जिन्दगी मे एक कण सौन्दर्य है, तब तक मरना पाप है। पागलो की तरह उन्ही तैरते हुए बादलो के साथ मैं चल पडा......अँधेरा हो गया.. (शीला दूध लाकर रख देती है और बैठ जाती है) मैं वहीं बैठ गया। थोडी देर मे उधर कुछ सियार आये। वे लोग किसी की लाश को घसीट रहे थे। मुझे देखकर भागे। मै समीप गया, देखा एक दस-बारह साल का लडका है। अभी साँस चल रही है। मैंने उसे बाहर निकाला। मन काँप उठा। मगर उठाकर लाने की ताकत नही थी। कितना सुन्दर था वह, कितना मासूम। मै बैठकर सियारो से उसकी रखवाली करने लगा। उस तरफ सितारे थे, इस तरफ लाश। बीच मे मै उसकी रखवाली कर रहा था। चारो ओर सुनसान! लग रहा था आसमान से अजब सी शान्ति मेरी आत्मा पर बरस रही है। मेरे व्यक्तित्व के रेशे फिर से सुलझते जा रहे हैं, और यह लड़का वह चिरन्तन

जीवन है, वह सौन्दर्य है जिसकी रखवाली मैं युगों से करता आ रहा हूँ और युगों तक करता जाऊँगा। जिन्दगी नील कमल की तरह मेरे सामने खुल गई। मुझे लगा कि आदमी सारी तकलीफ और दर्द के बावजूद इसलिए जिन्दा है कि वह सौन्दर्य और जीवन की खोज करे, उसकी रक्षा करे, उसका निर्माण करे—और सौन्दर्य के निर्माण के दौरान में वह खुद दिनों दिन सुन्दर बनता जाय। अगर कोई नहीं है उसके साथ तो भी वह सौन्दर्य का सपना, वह ईश्वर उसके साथ है। उसे आगे बढ़ना ही है...यही जिन्दगी के माने है। इसलिए मैं फिर जिन्दगी में वापस लौट आया कि क्रूरता और कमजोरी के सामने हारूँगा नहीं मरूँगा नहीं, सौन्दर्य का सृजन करूँगा और सुन्दर बनूँगा। जिन्दगी बहुत प्यारी है, बहुत अच्छी है, और आदमी को बहुत काम करना है।

शीला और उस लड़के का क्या हुआ ?

राजेश उसे रिलीफ की नाव ले गई। मैं इधर आ रहा था तो शंकर भइया मिल गये।

शीला दूध ठंडा हो रहा है पी लो। मैं फल ले आऊँ। (जाती है)

पद्मा तो अब आप जा क्यों रहे हैं ? लीजिए दूध पीजिए। (मुँह से गिलास लगा देती है)

राजेश (पीकर) मैं जा रहा हूँ इसलिए कि मेरी जगह वहीं है जहाँ कुरूपता और क्रूरता है। जहाँ मेरे सपने टूटे हैं क्योंकि वहीं मुझे लड़ना है। वहीं प्यार बिखेरना है, वहीं निर्माण करना है। मैंने जीवन का सत्य पाया है और उसे लेकर कामिनी के पास जाऊँगा, फिर सारी दुनिया के पास और अगर कोई नहीं मिलता तो अकेले, बिल्कुल अकेले चलूँगा, लेकिन हारूँगा नहीं। (पद्मा चुपचाप खिड़की के बाहर

देखती है और आँचल से आँसू पोछती है। राजेश उठकर उसके पास खड़ा हो जाता है। सिर पर हाथ रखता है)

राजेश पद्मा ! यह मोह गलत है। मुझे तो जाना ही है पद्मा ! लेकिन तुम मेरी बात समझो, हर चीज का सौन्दर्य पहचानो, उसे प्यार करो। मेरी बात मानोगी।

पद्मा मैंने कभी टाली है आपकी बात ?

राजेश देखो पद्मा कृष्णा को तुम्हारी जरूरत है। मैंने भी आज यही सीखा और तुम्हें भी यही कहूँगा कि दूसरों की जरूरत के लिए जिन्दा रहो, अपने लिए नहीं। तुमने उसे प्यार किया है मुझे नहीं। मुझसे तो तुम केवल मुग्ध रही हो। एक बौद्धिक सम्मोहन मात्र ! समझी। (पद्मा सिसकती है) छिः ऐसा नहीं करते पगली। उससे समझौता कर लो। उसके पास भाषा नहीं मगर हृदय बहुत बड़ा है। बहुत सुकुमार। उससे समझौता कर लेना। फिर अपने ब्याह में बुलाओगी हमें ? बोलो !

पद्मा (रूँधे गले से) हाँ.....

शीला फल लाती है

शीला क्या सचमुच अभी जाओगे राजेश ?

राजेश हाँ भाभी ! पद्मा, जल्दी से अटैची ठीक करो...भाभी ! ऊपर हमारे कपड़े पड़े होंगे।

शीला अभी लाई।

जाती है। राजेश चुपचाप बैठा है। बाहर कोई बड़े दर्दनाक स्वरों में वही गीत गाता है—'हाऽऽय बाढ़ी ऽऽ नदियाऽऽ' . . . .

पद्मा (अटैची सम्हालते हुए) क्या सोच रहे हैं आप ! जो आप कह रहे हैं, वही होगा। सचमुच मैंने कृष्णा से बहुत कठोर व्यवहार किया है। मैं उनसे क्षमा माँग लूँगी। मैं उन्हें समझा लूँगी।

(खिड़की के सामने से दो मुसाफिर बात करते हुए जा रहे हैं—"बिलकुल घट गया जल, मन्दिर से.....बड़ा अचम्भा है।" गीत बराबर चल रहा है ..... 'चढ़उबै पाठा जवान।' शंकर आता है। माथे पर बेहद पसीना)

शंकर पद्मा एक गिलास पानी लाओ जल्दी से.....

पद्मा जाती है।

राजेश क्या हुआ ? पूछा कृष्णा से ? मैं आज जाऊँगा जरूर। मेरा मन नाच रहा है शंकर। कृष्णा मुझसे मिलने नहीं आएँगे ?

शंकर (पलंग पर लेटते हुए) नहीं आयेंगे—पद्मा से कहना मत। उन्होंने खुदकुशी कर ली—वही देवी के मन्दिर के पास डूबकर....

पद्मा (दरवाजे पर सुनकर, चीखते हुए) भइया ! (गिलास छूट जाता है। शंकर से लिपटकर) भइया ! (सिसक सिसक कर रोने लगती है)

संगीत फिर तेज हो उठता है, गूँज उठता है—

'हाय बाढ़ी नदिया जिया लैके मानै !'

तेज़ होते हुए संगीत के साथ पर्दा गिरता है

नीली झील

पात्र

नीली झील का तान्त्रिक
नीली झील की पहली सन्तान
नीली झील की दूसरी सन्तान
नीली झील की आत्माहीन सन्तान

घटना-काल : ईसा जन्म के १९५० वर्ष बाद

अजब से बेडौल शक्ल वाले, काले-कुबड़े पर्वत शिखर, जिनको बीच-बीच में टेढ़े-मेढ़े रहस्यमय साँपों जैसे दर्रे चीरते हुए अँधेरे में खो जाते हैं। चट्टानें जहाँ खत्म होती हैं वहाँ से झील तक भूरी, सुनहरी, सूखी घास वाले मैदान की एक चन्द्राकार पट्टी है। उसके बाद शान्त नीली झील है, ज्यामिति के अठकोण के आकार की। किनारे पर एक बिल्कुल अपरिचित ढंग का पेड़ है जिसमें झील के आकार और रूप-रंग के बड़े-बड़े लम्बे पत्ते। पेड़ की कई जड़ें फूटी हैं।

पहाड़ों पर एक हल्का आलोक छाया है जिसमें कोहरे की एक हल्की चादर किसी विशाल गरुड़ के पंखों की तरह छाई है। सारा दृश्य इन्द्रजाल मालूम होता है। न पहाड़ असली है, न पेड़; न कोहरा, न झील और न बाँसुरी का वह संगीत ही इस लोक का मालूम होता है, जो जादू के इन नकली रहस्यमय पहाड़ों में रह-रह कर गूँज उठता है। बाँसुरी की तेज होती हुई आवाज के साथ कोने की एक बड़ी चट्टान को हाथ से हटाते हुए एक बूढ़ा प्रवेश करता है। झील के रंग की पोशाक, माथे पर रक्त-चन्दन बाल भौंह तक हिमश्वेत हैं। पीठ दोहरी हो गई है। पैर और गर्दन काँपती है। स्टेज पर आकर झील के किनारे वह रुक जाता है। झुक कर झील में अपनी छाया देखता है और फिर दर्शकों की ओर देखता हुआ कहता है :—

नीली झील ! मैं नीली झील का बूढ़ा तान्त्रिक हूँ। मेरी इन बूढ़ी आँखों ने न कभी झील को सूखते हुए देखा है और न विक्षुब्ध होते हुए। इन काली-सूखी, नंगी और क्रूर चट्टानों के बीच यह झील हममें रस

का सचार करती है, हमे जीवन देती है। हम और हमारी जाति लाखों वर्षों से इन्ही चट्टानो के बीच, इसी झील के किनारे रहते आए है।

स्टेज पर एक ओर से एक व्यक्ति बाँसुरी लिए हुए और दूसरी ओर से दूसरा व्यक्ति एक हाथ मे हँसिया, दूसरे में धान के पूले लिये आता है।

यह हमारी जाति के लोग है, जो चट्टानो की छाती फोड कर जिन्दगी उगाते है, और बाँस की टहनियो को गुदगुदा कर सगीत बिखेरते है।

पहिला व्यक्ति ये चट्टाने हमे बल देती है।

दूसरा व्यक्ति ये वृक्ष हमे छाया देते है।

पहला व्यक्ति यह झील हमे जीवन देती है।

दूसरा व्यक्ति हम झील के किनारे चट्टानो के बीच, फूलो की तरह खिलते है।

पहला व्यक्ति हम धूप और वर्षा, रेत और तूफान झेल कर फूलो की तरह मुर्झा जाते है।

दूसरा व्यक्ति फिर माँ धरती अपनी बाहे खोल कर हमे सुला देती है।....

पहला व्यक्ति और हमारी हड्डियाँ भी जम कर चट्टान बन जाती है।

तान्त्रिक पुनः आगे आता है।

तान्त्रिक मुझमें चट्टानो से लडने की ताकत नही रही। मेरी इन धुँधली आँखो ने तिरसठ चन्द्रग्रहण देखे है। मेरी इन मुट्ठियो ने सवा सौ फसले काटी है। अब मै चट्टानो से नही लड सकता। अब मै तान्त्रिक हूँ, ये फसलो की देख-भाल करते है।

पहला व्यक्ति और तान्त्रिक हमारी आत्मा की देख-भाल करता है।

दूसरा व्यक्ति जैसे चरवाहे भेड़ो की गिनती रखते है वैसे तान्त्रिक हमारी आत्मा की गिनती रखता है।

तान्त्रिक जब ये झील के किनारे चलते हैं, इनकी परछाई झील में लहराती है । जिस दिन इनमे से कोई अपनी आत्मा कहीं खो आता है उस दिन झील क्रुद्ध हो जाती है । उस दिन इनकी परछाई झील मे नही झलकती । उस दिन मैं इनसे पूछता हूँ—तुम्हारी आत्मा कहाँ गई और उस दिन जो निरुत्तर हो जाता है, उसे इन अन्धी घाटियो से अपनी आत्मा खोजने अकेले जाना पडता है, बिल्कुल अकेले ।

पहला व्यक्ति (मायूसी और भय से) उनमे से कोई आज तक लौट कर नही आया ।

इसी बीच में बाँई ओर के पहाड़ों में से एक बिलकुल आधुनिक ढंग की पोशाक पहने व्यक्ति, हाथ में एक सुन्दर थैला लिए धीरे-धीरे स्टेज के किनारे आकर खड़ा हो जाता है, ठिठका हुआ-सा । उसे देखते ही दूसरा व्यक्ति सहम कर बूढ़े तान्त्रिक का कंधा छूकर संकेत से आगन्तुक को दिखाता है ।

दूसरा व्यक्ति (आकुलता से) कौन है यह ?

पहला व्यक्ति (विरोध के स्वर मे) यह यहाँ कैसे आया ?

दूसरा व्यक्ति (आकुलता से) हम पर कोई आपत्ति आने वाली है ।

तान्त्रिक (बूढी आँखो सर काँपती हुई हथेली रख कर ध्यान से देखता हुआ) कौन हो तुम ? (आगन्तुक खामोश)

पहला युवक (धमकी से) तुम यहाँ कैसे आए ? (आगन्तुक खामोश)

दूसरा युवक यह हमारा देश है । नीली झील की सन्तानो का देश है ।

पहला युवक यहाँ हमारे पूर्वज रहते आए है । यहाँ उनकी हड्डियाँ चट्टान बन गई है ।

आगन्तुक खामोश रहता है पर आगे बढ़ता है ।

तान्त्रिक यहाँ न कोई ज़िन्दा आ पाता है, न यहाँ से वापस ज़िन्दा जा

पाता है । (आगन्तुक खामोश बढ़ता है) पागल लडके लौट जा, सिवा नीली झील की सन्तानों के, यहाँ कोई कदम नही रख सकता ।

पहला व्यक्ति तुम्हारी हड्डियो मे मोर्चा लग जायगा ।

दूसरा व्यक्ति तुम्हे नीली झील निगल लेगी ।

आगन्तुक मै भी नीली झील की सतान हूँ ।

तान्त्रिक तुम ?

आगन्तुक हाँ मै, आज से बीस चन्द्रग्रहण पहले पछुआ हवाओ के पीछे-पीछे मै यहाँ से चला गया था, उधर उस देश मे जहाँ झीले बाँध दी गई है, जहाँ नदियो से रोशनी खीची जाती है ।

तान्त्रिक अच्छा याद आया । हम लोगो ने तुम्हारी बहुत खोज की । तुम नही मिले, तो हमने पूज्य पर्वतो से तुम्हारे कल्याण की कामना की ।

पहला व्यक्ति हमने तुम्हारे लिए नीली झील से कुशलता का आशीर्वाद माँगा ।

तान्त्रिक और तुम्हे नीली झील ने वापस बुला लिया । इधर आओ तुम्हे देखूँ । (तान्त्रिक स्नेह से उसकी बाँह टटोलता है । दोनो व्यक्ति आश्चर्य से उसकी पोशाक छूते है । उसका थैला देखते है)

आगन्तुक मैने उस देश मे दिग्विजय की और जब कुछ भी ऐसा न बचा जिसे मै जीत सकूँ तो मुझे याद आई नीली झील की । मै पर्वतो और झीलो को अर्पण करने के लिए सोना लाया हूँ ।

सोना निकालता है ।

पहला व्यक्ति (आश्चर्य से) सोना।

दूसरा व्यक्ति (लालसा से) सोना।

तान्त्रिक (डाँट कर) सोना ! रख दो उसे। तो तुमने वहाँ सोना निकलवाया ।

आगन्तुक मैंने जगलो से काले हब्शी पकडे। उनसे खानें खुदवाईं, उनको कोडे लगवाए और उनसे सोना निकलवाया।

तान्त्रिक और क्या किया उस सोने से ?

आगन्तुक मैंने उस सोने मे औरतें खरीदी, उन औरतो के लिए हाथी दाँत की शय्या और मोती के हार खरीदे।

पहला व्यक्ति हार ! कितना सुन्दर है यह। (तान्त्रिक ताडना की नजर से देखता है, वह चुपचाप हार रख देता है।)

तान्त्रिक और ?

आगन्तुक और उनके लिए बारीक कपडे खरीदे जिनमें वे और भी निर्लज्ज दीख पडे।

तान्त्रिक और ?

आगन्तुक और जब उन गुलामो, उन औरतो और उनके पिलपिले बच्चो से तबियत ऊब गई तो मैंने फौलाद की भट्ठियाँ बनवाई जिनमें उन्हे घास-फूस की तरह झोक दिया।

पहला व्यक्ति फौलाद की ?

आगन्तुक आगन्तुक हाँ फौलाद की भट्ठियाँ। उनको लोग मशीने कहते है। लेकिन उन मशीनो ने उन गुलामों और औरतो को पीस कर और भी चतुर बना दिया और वे पता नही किस चीज के लिए लडने लगे जिसे वे (याद करते हुए) अधिकार कहते थे।

तान्त्रिक तब ?

आगन्तुक तब मैंने भी उसी अधिकार की बात कहनी शुरू की। और

एक ओर उन मशीनो और दूसरी ओर उन गुलामो पर कब्जा जमाया और मेरे हाथ मे राजदण्ड आ गया और....

तान्त्रिक और ?

आगन्तुक और तब प्रजाओ का राज्य हुआ ! पजातन्त्र ! सत्ता मेरे हाथ मे थी, तत्र प्रजाओ का था। फिर प्रजातन्त्र दो हुए। सोने के प्रजातन्त्र और जनता के प्रजातन्त्र, और सोना मेरा था और जनता के दिमागो पर कब्जा मेरा था और प्रजातंत्र दो थे, एक का तानाशाह मै था और दूसरे का तानाशाह मै था और मै अपने से लड़ने लगा।

तान्त्रिक तुम अपने से लडने लगे ?

आगन्तुक हां। नही; मै तो सिर्फ हुक्म देता था। एक ओर मे मेरी प्रजाएँ लड़ती थी और दूसरी ओर से मेरी प्रजाएँ लड़ती थी और एक ओर से मेरी प्रजाओ का रक्त बहता था और दूसरी ओर से मेरी प्रजाओ का रक्त बहता था; इस तरह एक युद्ध हुआ, दूसरा युद्ध हुआ, तीसरा युद्ध हुआ और प्रजाओ को खून का चस्का लग गया और वे कटती-मरती रही...मै उनका सोना, उनके कपडे, उनका अन्न, उनका वैभव, उनका तेज, उनका बल लेकर चला आया नीली झील के देश मे।

तान्त्रिक तो तुम उस देश से अपना सोना सही-सलामत ले आए ?

आगन्तुक आगन्तुक मै उस देश से उनका सोना सही-सलामत ले आया।

तान्त्रिक तुम उस देश से अपना अन्न, बल, वैभव, तेज सही-सलामत ले आए ?

आगन्तुक मै उस देश से प्रजाओ का अन्न, बल, वैभव, तेज, सही-सलामत ले आया।

तान्त्रिक और अपनी आत्मा ?

आगन्तुक आगन्तुक—आत्मा ?

तान्त्रिक तुम उस देश से अपनी आत्मा सही-सलामत ले आए ?

आगन्तुक आत्मा, आत्मा क्या ?

तान्त्रिक इतनी जल्दी भूल गए ? (हँस कर) याद करो, तुम यहाँ से एक आत्मा भी ले गये थे ?

आगन्तुक मैं ले गया था यहाँ से ?

तान्त्रिक याद करो, तुम जब इन चट्टानो की गोद मे खेलते थे, तो इन चट्टानो ने तुम्हे एक आत्मा दी थी, जो इन्ही चट्टानों की तरह अटूट और दृढ थी, इन्ही की तरह विराट और निर्लेप थी। इन्ही की तरह...

आगन्तुक आत्मा, चट्टानो की तरह ?

तान्त्रिक याद करो, जब तुम इस नीली झील के किनारे बैठ कर बांसुरी बजाया करते थे तो लहरो के साथ नाचती हुई एक परछाई आती थी और तुम्हारे पैरो के पास शान्त जल मे सोई हुई तुम्हारा गीत सुनती थी। वह नीली झील के समान स्वच्छ और गहरी थी, वह झील की सतह पर साँवले कमल की तरह खिलती थी।

आगन्तुक साँवले कमल की तरह ?

तान्त्रिक याद करो, तम इस पेड की छाँह मे बैठते थे, तो एक आत्मा आशीर्वाद की तरह तुम पर छाई रहती थी। वह इस पेड की तरह धरती की गहराइयो से अकुरित हुई थी। वह सोधी मिट्टी से जीवन खीचती थी और अधकार की पर्तें तोडती हुई दिन-दिन ऊँचे उठती थी, आकाश की ओर बढ़ती थी, पवित्रता की ओर बढ़ती थी।...

आगन्तुक पवित्रता की ओर ? मुझे कुछ भी याद नही आता। मुझे

कुछ भी याद नही आता। मैं यहाँ से कोई आत्मा नही ले गया।

तान्त्रिक तुम झूठ बोलते हो, तुमने राजदंड से अपनी आत्मा की हत्या कर दी, उसे सोने के मकबरे मे दफन कर दिया। तुम्हारे राजदड पर गाढ़े खून के दाग है। तुम्हारे सोने पर मक्खियाँ बैठ रही है।

आगन्तुक (चीखकर) मैंने किसी की हत्या नही की। तुम झूठ बोलते हो।

तांत्रिक (शान्त) मैं झूठ बोलता हूँ? इधर आओ इस झील के किनारे खड़े होओ। इसमे झुक कर देखो। क्या देख रहे हो?

आगंतुक कुछ नही दीख रहा।

तांत्रिक (दूसरे व्यक्ति से) इसके क्या अर्थ है?

दूसरा व्यक्ति इससे मालूम होता है यह आदमी अपनी आत्मा कही खो आया है।

तान्त्रिक (पहले व्यक्ति से) अपनी बाँसुरी दो इसे। (आगन्तुक से) फूँको इसे (बाँसुरी खामोश) इसके क्या अर्थ हैं?

पहला व्यक्ति इसकी आत्मा मर गई है। इसमे प्राण नही, साँस नही, संगीत नही।

तान्त्रिक ठीक (आगन्तुक आगे बढता है) खबरदार, वही खडे रहो। यह महान व्यक्ति नीली झील की दिग्विजयी सन्तान है। इसकी पीठ पर सोना है और हाथ में राजदड और यह आत्माहीन है। (दोनो व्यक्तियो से) दूर रहो, इसकी छाँह जिस पर पडेगी उसकी पसलियों के नीचे पंजे निकल आवेगे, उसके दिमाग में कीडे रेंगने लगेगे... (उसके चारो ओर एक वृत्त खीचता है) इसके

आगे मत बढ़ना...मत बढ़ना। (दूसरे व्यक्ति से) जाओ, घाटी में मुनादी करा दो कि कोई बच्चा झील के किनारे खेलने न आए, गृह-वधुएँ द्वार बन्द करले। किसी पर इस व्यक्ति की छाँह न पडे। कह दो कि वह नीली झील की गौरवमयी सन्तान है जो २० चन्द्रग्रहणो बाद सोना और राजसत्ता जीत कर आई है, पर अपनी आत्मा की हत्या कर आई है।

आगन्तुक यह झूठ है।

(दूसरा व्यक्ति जाता है, जाते समय लालचभरी निगाह से घूम-घूमकर सोने की ओर देखता है।)

तान्त्रिक झूठा आरोप है। तुमको विश्वास नही होता। अच्छा मै तुम्हे दिखाता हूँ पवित्रता की राजकुमारी हमारी आदि जननी यह नीली झील कभी झूठ नही बोलती। (पहिले व्यक्ति से) इधर आओ, झील के किनारे खडे हो। मन मे एक ताजे कमल की कल्पना करो जिसमे एक हजार एक पखुडी हो...(मत्र-सा पढ़ता है) मै तुम्हारी आत्मा को तुमसे अलग करता हूँ...मै तुम्हारी आत्मा को अतीत के अँधियारे देश मे भेजता हूँ...मै तुम्हारी आत्मा को इतिहास के बीते हुए मगर अलिखित अध्यायो मे भेजता हूँ। तुम्हारी आत्मा क्या देख रही है?

पहला व्यक्ति नीली झील में काले पहाड काँप रहे है और उन पर एक घायल हिरणी दौड रही है।

तान्त्रिक वह इसकी आत्मा है।

पहला व्यक्ति काले गुलाम एक चट्टान उलट रहे है। वह सोना बटोर

रहा है। चट्टान के नीचे एक फूल की झाडी कुचल गई है।

तान्त्रिक वह इसकी आत्मा है।

आगन्तुक (भय से चीख कर) यह झूठ है।

पहला व्यक्ति हाथी दाँत की मेज पर एक लडकी सिसक रही है, उसके गोरे अगो पर गन्दे घाव है।

तान्त्रिक वह उसकी आत्मा है।

आगन्तुक यह सब झूठ है।

पहला व्यक्ति फौलाद की भट्ठियाँ एक बच्चे को निगल रही है। प्रजाएँ एक दूसरे का गला घोट रही है, मैदानो पर खून के धब्बे है। एक औरत इसकी बाँहों से छूट कर काली चट्टानो पर भाग रही है। यह उसका पीछा करता है, वह भागती है। नीली झील खून की तरह लाल हो गई है। वह चीख कर उसमे कूद गई है, लहरें उसे निगल रही है। वह अथाह रक्त में डूब रही है, डूबती ही जाती है!

तान्त्रिक वह इसकी आत्मा है।

आगन्तुक (घुटनो मे सर छिपा लेता है।) सच है, (बहुत मायूस-स्वर मे) बिलकुल सच है।

पहला व्यक्ति इसने हत्या की है (सर उठा कर रक्तमय नेत्रो से) आत्मा की, इसने हत्या की है।

दूसरा व्यक्ति लौटता है।

दूसरा व्यक्ति (हवा मे किसी का गला घोटता हुआ) इसे नीली झील में फेंक देना चाहिए। तुमने कभी किसी का गला घोंटा है।

पहला व्यक्ति नही, गला घोटने मे भी कोई आनन्द होगा तभी तो इसने...

दौड़ कर आगन्तुक का गला पकड़ता है।

तान्त्रिक दूर रहो, तुम पर इसकी छाया पड गई।

दूसरा व्यक्ति मै इसका सोना लूँगा (सोना लेता है)

पहला व्यक्ति (गला छोडकर दूसरे व्यक्ति का हाथ पकडता है) सोना मै लूँगा, तुम मोती लो।

दूसरा व्यक्ति सोने पर मेरा हक है।

तान्त्रिक (आगे बढ कर) खूँखार भेडियो! पीछे हटो! नीली झील में तुम्हारी परछाईं हिल रही है। मै कहता हूँ, वापस जाओ। वरना मै आदेश दूँगा और पेड की डाले अजगर की तरह तुम्हे मरोड़ देगी।

(वह आगे-आगे बढ़ता है। दोनों व्यक्ति मंत्रमुग्ध-से पीछे हटते हैं हटते-हटते पहाड़ों के पीछे चले जाते हैं। आगन्तुक उठता है, झील में देखता है और फिर भयभीत होकर मुँह ढँक लेता है। तांत्रिक आकर उसके कंधे पर हाथ रखता है।

आगन्तुक मुझे छुओ मत। मुझे हत्या लगी है। मैंने हत्या की है। उन्हे बुलाओ। वे मुझे चट्टानो से कुचल दे...

तान्त्रिक नही मेरे बच्चे, तुम मरोगे नही।

आगन्तुक ये चट्टाने मुझसे बदला लेगी। यह झील मुझसे बदला लेगी। मै आत्माहीन हूँ!

तान्त्रिक यह झील तुम्हे क्षमा कर देगी। मै बूढा हूँ। मै स्वत्वहीन हूँ, निरर्थक हूँ। तुम्हारे पाप मै अपनी आत्मा पर ले लूँगा। मै तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा। (घुटने टेक कर प्रार्थना करता है) ओ अनन्त करुणामयी झील, इसे क्षमा करो। ओ

विराट पहाडो, इसने अपनी आत्मा की हत्या कर डाली है। इसके लिये इससे बडी सजा और क्या हो सकती है कि यह अपनी आत्मा से वंचित हो गया है। इसे क्षमा कर दो। इसे जीवनदान दो। इसे नई आत्मा दो।

आगन्तुक (सन्देहशील और आश्वस्त मिश्रित भाव से) नई आत्मा ?

तान्त्रिक क्यों नही ? तुम मरोगे नही। नई आत्मा ढूँढने के लिए जीवित रहोगे।

आगन्तुक मै ?

तान्त्रिक हाँ तुम ! नई आत्मा ढूँढने के लिए वापस जाओ उसी देश मे जहाँ युद्ध हो रहे है, जहाँ प्रजाएँ रक्तपात कर रही है। जहाँ फौलाद की भठिट्याँ धधक रही है। जाओ, उस सघर्ष का अथ समझो। अन्धेरे से विद्रोह करो, प्रकाश पर आस्था रक्खो, तुम्हे नई आत्मा मिलेगी।

आगन्तुक सच ?

तान्त्रिक जाओ ! आगे बढो ! (स्टेज की सीढियो की ओर सकेत करते हुए) उतरो, जिन्दगी मे उतरो (आगन्तुक दोनो बाँहें फैलाए हुए आँख खोले हुए अन्धो जैसा टटोलता हुआ आगे बढता है) तुम अधकार मे हो। तुम प्रकाश की ओर बढ़ रहे हो (दर्शकों तक पहुँच जाता है) डरो मत, घबराओ मत। आस्था से विचलित मत होओ। लोगो मे ढूँढ़ो, जनता को छूओ, जिन्दगी में उतरो। तुम्हे नई आत्मा मिलेगी। साहस मत खोओ। तुम लौट कर आओगे तो झील पर तुम्हारी परछाईं पूनम के चाँद की तरह तैरेगी। चट्टाने बाँहे फैलाकर तुम्हारा स्वागत करेगी। (दर्शको की ओर देखकर) वह तुम्हारे बीच मे डोल रहा है। वह आत्माहीन छाया तुम्हे छू रही है, लेकिन

घबराओ मत ! वह अपनी आत्मा ढूँढ़ रहा है । उसे सहारा दो। उसकी मदद करो (धीरे-धीरे पीछे का पर्दा गिरता है । आगन्तुक धीरे-धीरे स्टेज पर लौट आता है) मैं तो बूढ़ा हूँ । मैं नहीं रहूँगा । ये पहाड़ टूट गिरेंगे। वह झील सूख जायगी। यह पेड उजड जायेंगे। यह झूठ था—नीली झील, यह घाटी इसके लोग—यह सब मेरी कल्पना थी, मेरा इन्द्रजाल था। असल था, सत्य था केवल वह जो दोनों बाँहें फैलाये अपनी आत्मा ढूँढ रहा है। वह हमारे और तुम्हारे माध्यम से आवेगा। भविष्य की दुनिया उसकी होगी । तब न मैं रहूँगा, न मेरा इन्द्रजाल। न तुम, न तुम्हारी कला । रहेगा सिर्फ वह जो आज अपनी नई आत्मा ढूँढ रहा है···वह तुम्हारे व्यक्तित्व को छुयेगा, तुम्हारी आत्मा में उतरेगा । क्योंकि तुम्हारे व्यक्तित्व और तुम्हारी आत्मा में उस आत्माहीन को नई आत्मा मिलेगी और वही सत्य होगी। मेरी ओर मत देखो । यह नीली झील और उसका तान्त्रिक मैं, केवल इन्द्रजाल थे। यह झूठा खेल था जो अब खत्म होता है।

एक ओर तान्त्रिक और दूसरी ओर आगन्तुक जाता है।

सामने का पर्दा भी गिर जाता है।

आवाज़ का नीलाम

पात्र

दिवाकर—एक पत्रकार
बाजोरिया—एक सेठ

घटना-काल : १९४७ में स्वतंत्रता मिलने के बाद

'आवाज़' सम्पादक दिवाकर का कमरा। एक तरफ एक तख्त। बड़ी-सी मेज़ पर अखबार, कागज, सोख्ता, पिन कुशन, ऐश ट्रे, टेबल कैलेन्डर वगैरह बहुत अस्तव्यस्त हालत में। कागज बिखरे हैं, पेपर-वेट ऐश ट्रे पर रक्खा है, पिन कुशन खाली है, पिनें मेज पर पड़ी हैं, सिगरेट की राख पिन कुशन के पास इकट्ठा है। बगल में एक तिपाई पर टेलीफोन रक्खा है।

मेज के पीछे दीवार पर सुभाष बोस का बहुत भव्य चित्र लगा है, जो गर्व और मैल से धुंधला पड़ गया है। तस्वीर के नीचे ही दीवार में साप्ताहिक 'आवाज' की फाइल टँगी है। एक दूसरी कील पर दिवाकर का कोट।

मेज पर पैर फैलाए हुए दिवाकर अपनी कुर्सी पर बैठा है। मैला पेंट, कमीज के बटन खुले हुए, सिगरेट ऐश-ट्रे के सहारे रक्खी हुई सुलग रही है। बाल बिखरे हुए, कालर अस्तव्यस्त, सिर कुर्सी की पीठ पर टिका हुआ, आँखें छत पर टिकी हुईं, सूनी-सूनी विचित्र सी मुद्रा। सामने ही एक छोटा सा जापानी ट्वाय पियानो रक्खा है जिसे वह अपने फाउन्टेनटेन पेन से टुनटुना रहा है! लम्बी-लम्बी गहरी साँसें, उचटा-उचटा हुआ-सा अमंगल-सा वातावरण। सहसा टेलीफोन की घंटी बज उठती है। वह चोंगा हाथ में उठा लेता है:

दिवाकर हलो .कौन, बाजोरिया जी हाँ यही हूँ।... नही अस्पताल नही गया, आपरेशन तो सुबह हुआ था... जी, जब मै आया तब तो वाइफ को नीद आ गई थी..... हाँ आज भर खतरा है . देखे क्या होता है.. हाँ, आप

आइए... हाँ, हाँ, कोई बात नहीं . अच्छा अच्छा... मैं यही हूँ, बड़ी कृपा। (टेलीफोन रख देता है, दाँत पीस कर टेलीफोन की ओर देखता हुआ) कृपा ! बेईमान, कमीना मैं खूब समझता हूँ तुम्हारी कृपा। आज १० साल से जब मैंने अपनी एक-एक हड्डी जलाकर अखबार निकाला, सरकार से लड़ा, सेठों से लड़ा, ज़मानतें दीं, घर बिक गया, बीवी सूखकर ककाल हो गई, तब किसी ने दया नहीं दिखाई। मैंने किसी के सामने सिर झुकाना जो नहीं सीखा था। आज जब अखबार बेच रहा हूँ तो दिन में तीन-तीन मर्तबा टेलीफोन से हाल पूछा जाता है। कितनी चिन्ता है सेठ बाजोरिया को ? पाँच मिनट में आ रहे हैं, (गहरी साँस लेकर) ५ मिनट ! (पेन से पियानो के पर्दे झंकारता है और गिनता जाता है—) एक . दो तीन...चार.. पाँच मिनट (उठकर दीवार पर से 'आवाज' की फाइल उतारता है। उसे बच्चों की तरह गोद में लेकर टहलता है।) बस पाँच दस मिनट और ! उसके बाद तुम मेरे नहीं रहोगे। मैं दस्तखत कर दूँगा और तुम बिक जाओगे। कितनी साध से मैंने तुम्हें निकाला था, कितनी लगन से, कितनी मुसीबतें झेल कर तुम्हें चलाया था। याद है तुम्हें ! जब तुम्हारा विशेषांक निकल रहा था और शीला सीढ़ी पर से गिर पड़ी थी, लेकिन मैं उसके पास नहीं था। याद है जब शीला की दवा के रुपये से मैंने सत्तार प्रेस वाला टाइप खरीद लिया था। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ भूल गया था, अपने को, अपनी फूलों जैसी बच्ची को, अपनी शीला को, महज इसलिए कि तुम मेरी आत्मा की आवाज़ बन सको, मेरी नंगी भूखी जनता की आवाज बन सको। सत्य की आवाज बन सको। लेकिन

नहीं. ....अब तुम बाजोरिया की आवाज़ बनोगे। (आवेश से) तुम्हारा नीलाम होगा। (नीलाम करने वालों की सी आवाज में) आवाज, आवाज जनता की आवाज़, आत्मा की आवाज, सच्चाई की आवाज। नीलामी बोली ६ आना, साढे ६ आना साढ़े ६ आना एक..... साढे ६ आना दो—(पियानो पर ठुनकी मारता है) साढ़े ६ आना तीन! (कुर्सी पर धम्म से बैठ जाता है, गिर सा पडता है। दो क्षण की खामोशी। फिर एक अजब-सी हँसी, लुटी-लुटी हुई सी सहसा फोन की घटी बजती है। साथ ही बाहर मोटर के आने की, हार्न की और मोटर के फाटक बन्द होने की आवाज। वह फोन उठाता है—) हलो.. मैं हूँ दिवाकर, कहिए. हाँ हाँ, अच्छा शीला जाग गई है ?.. मुझे बुला रही है. ठीक, मैं अभी आया. हालत ठीक नहीं है ? .कोई खतरा नहीं तब ठीक है।. अच्छा, कोई बात हो तो फोन करना ?. ..

इसी बीच में सेठ बाजोरिया आते हैं। खद्दरधारी, बहुत स्थूलकाय नहीं। चेहरे पर शालीनता। आते ही पूछते हैं, 'कहिए मिस्टर दिवाकर!' फिर दिवाकर को फोन करते हुए देखकर 'ओह' कहकर रुक जाते हैं, दिवाकर के संकेत करने पर बैठ जाते हैं।

बाजोरिया (दिवाकर के फोन कर चुकने पर) क्या हाल है वाइफ का ?

दिवाकर एक अजब से तीखे गुस्से और नपुंसक लाचारी से उसकी ओर देखता है, फिर एक अजब-सी हँसी हँस कर बैठ जाता है। कुछ जवाब नहीं देता। सिर झुकाकर बैठ जाता है और पेन से पियानो को झंकारने लग जाता है।

बाजोरिया (और आगे कुर्सी खिसकाकर, चेहरे पर बहुत आत्मीयता लाकर, स्वर में बहुत सहानुभूति भरकर—) क्या बात है दिवाकर जी ? सम थिंग सीरियस ?

दिवाकर कोई बात नहीं है सेठ जी ! (गहरी साँस लेकर) बात क्या होती। मेरी कुछ अजब सी आदत है। जब मन बहुत परेशान होता है तो यह पियानो बजाने लगता हूँ। जाने क्यो ..लेकिन . .आप भी सोचते होगे...

बाजोरिया (कुछ मुस्करा कर) नहीं, नहीं, नर्वस टेन्शन में अक्सर ऐसा होता है। लेकिन यह बच्चो का पियानो ? (हँसता है, दिवाकर भी हँसता है।)

दिवाकर (पियानो हटा कर) क्या बताऊँ ? अखबार की दुनिया में रोज खबरे आती है। हड़तालो के नारे, लड़ाइयो का शोर-गुल, सेनाओ की परेडे, जगी जहाजो का घर्राटा लेकिन मुझे सब इतने बेमानी, इतने खोखले लगते है जितने इस बचकाने खिलौने के स्वर। लेकिन कभी-कभी लगता है इन्ही ध्वस और विनाश की आवाजो मे कही नये इन्सान की आवाज का भी निर्माण हो रहा है। मैंने सोचा उस आवाज़ को जिन्दा रखने के लिए, उसे ऊपर लाने के लिए मैं अपनी हस्ती को मिटा दूँगा, वही आवाज मेरी जिन्दगी होगी। इसीलिये

बाजोरिया शायद इसीलिये आपने अपने अखबार का नाम 'आवाज' रक्खा था।

दिवाकर जी हाँ ! और इस आवाज के लिए अपने को बर्बाद कर दिया था, लेकिन जनता नए इन्सान की आवाज नहीं सुनना चाहती। उसे सच्चाई की आवाज नहीं चाहिए। उसे चाहिए शोख कवर, भडकीले चित्र, रंग-बिरंगे विशेषांक. .वह सब जो उसे सेठ बाजोरिया के अखबार मे मिलता है।

बाजोरिया देखिए ! यह पर्सनल रिमार्क आपको शोभा नहीं देता दिवाकर जी, आप मुझे बिल्कुल गलत समझ रहे हैं। मेरा कतई यह इरादा नही कि मैं जनता को गुमराह करूँ। बात यह है दिवाकर जी, कि मुझे साहित्य और पत्रकारिता से कुछ इतना लगाव है कि दिन-रात मैं सोचता हूँ कि हमारे यहाँ भी अमरीका की तरह सजे-सजाए अखबार निकले, सस्ते से सस्ते, सुन्दर से सुन्दर। ज्यादा से ज्यादा जनता उन्हें पढ़े। उसका सांस्कृतिक स्तर ऊँचा हो।

दिवाकर सांस्कृतिक स्तर ऊँचा हो। (व्यय से हँसकर) इधर तमाम लोगों को सांस्कृतिक स्तर सुधारने की बीमारी लगी है। कोई 'टाइम्स' खरीद रहा है, तो कोई 'लाइमलाइट' ! आप..

बाजोरिया (बात काट कर) मैं भी 'आवाज़' खरीद कर वही करना चाहता हूँ, यही मतलब है न आपका ? (कड़े स्वर में) मिस्टर दिवाकर ! दुनिया भी कितनी स्वार्थी होती है। कितनी अहसान फरामोश होती है। (उठकर टहलने लगता है) आपको जरूरत थी, आपने सन्देशा कहलाया था, आप इस वक्त मदद चाहते थे। और जब मैं 'आवाज' के शेयर खरीदने के लिए राजी हो गया तो आप इस तरह चोट कर रहे हैं। (मुड़कर, खड़े होकर) शायद आप समझ नही रहे है कि आप अपने पैरों में कुल्हाडी मार रहे है।

दिवाकर (सुस्त पड़कर, पियानो पर सिर रखकर) भूल गया था मैं। गरजमन्द मैं हूँ, आप तो ग्राहक है। आपकी तो चार बात.

बाजोरिया (मेज पर झुककर बड़े मुलायम स्वरों मे) नही नही, मेरा यह मतलब. .

दिवाकर नही, मैं समझता हूँ। महीने भर से मेरी पत्नी की बीमारी पर आपने पानी की तरह रुपया बहाया है.

बाजोरिया (कुर्सी पर बैठ कर) छी. छी दिवाकर जी ! ऐसी बाते कहकर ज़लील न कीजिए । (बहुत स्नेह से उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर) यह मैंने आप पर अहसान नही किया है । आपने अपनी जिन्दगी मे जितना त्याग किया है, जितनी साधना की है, उसके लिए हमारे दिल मे कितनी श्रद्धा है, यह आप समझ भी नही सकते ।

दिवाकर (पियानो टनकारते हुए) अच्छा है मै न समझ सकूँ, बाजोरिया जी । अब साधना और तपस्या के दिन भी तो नही रह गए । अब कलम की शान और विचारक की आजादी का भी तो कोई अर्थ नही रहा । अब तो अगर मै आपके पत्र मे हूँ तो आपका ढोल बजाऊँ, उसके पत्र मे हूँ तो .

बाजोरिया (थोडा अप्रतिभ हो जाता है) मै और लोगो की बात नही जानता, लेकिन जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, कम से कम आपसे मै इस तरह की बात सुनने की उम्मीद नही करता था । पाँच अखबार है मेरे । क्या आप बता सकते है कि मैंने किसी के सम्पादक पर कभी कोई प्रतिबन्ध लगाया है ?

दिवाकर (ठण्डे फौलाद के से स्वर मे) बाजोरिया जी, किसी आदमी का सबसे बडा गुनाह यह है कि वह दूसरे आदमी को अपने बारे मे सच बोलने के लिए मजबूर कर दे ।

बाजोरिया (भौंह सिकोड कर) क्या मतलब ?

दिवाकर क्या मतलब . . .(तैश से) क्या आप कह सकते है कि आपने प्रतिबन्ध नही लगाया है ? चैटर्जी ने उस दिन गृहमन्त्री के वक्तव्य पर टिप्पणी लिखी थी । उस पर किसने चैटर्जी को कमरे मे बुलाकर डाँटा था ?

बाजोरिया (तैश में मेज पर हाथ पटक कर) यह गलत बात है ।

दिवाकर यह सही बात है । आप जानते है, जब चैटर्जी को ६० रुपए

मिलते थे तब वह सम्पादकीय लिखता था, आज जब आप उसे ढाई सौ दे रहे है तब वह डिक्टेशन लिखता है। आपका डिक्टेशन, जिसने अपनी जिन्दगी मे सिवा बही खाते के कुछ भी न लिखा होगा......

बाजोरिया लेकिन......

दिवाकर लेकिन क्या? आप मालिक है, आप उसे डॉट सकते है, उसे जिसके बाल अखबार नवीसी मे सफेद हो चुके है।

बाजोरिया (दोनो मुट्ठियाँ बाँधकर, बडी खीज मे) मुझे अफसोस है, मिस्टर दिवाकर, कि आप भी अधकचरे साम्यवादियो की तरह बाते करने लगे है। हर चीज को एक ही पहलू से आप क्यो देखते है? अगर मैने चैटर्जी को डॉटा भी तो उसमें कोई पूँजीवादी राजनीति तो नही थी।

दिवाकर (बडे तीखे व्यंग मे) नही जी, उसमे तो गांधीवादी अध्यात्म था!

बाजोरिया दिवाकर जी, (उठकर टहलने लगता है) उसमे गांधीवादी अध्यात्म नही, लेकिन कम से कम वैयक्तिक सम्बन्धो की बात तो जरूर है। गृह-मंत्री मेरे मित्र है। क्या आप चाहेंगे कि आपके पत्र मे आपके मित्रो की बुराई निकले?

दिवाकर ओफ़ोह! आज गृह-मन्त्री आपके मित्र है...लेकिन सन् ४२ मे गृह-मन्त्री आपके मित्र नही थे जब पुलिस उन्हे हथकडियाँ पहनाकर आपके दरवाजे से ले गई थी! उस दिन आप उनसे दौडकर गले नही मिले थे......उस दिन तो आप मिलीटरी के लिए ठीके ले रहे थे और आपके अखबार अँग्रेजी सरकार का विज्ञापन छाप रहे थे कि कांग्रेसवाले गुन्डे है। कम से कम चैटर्जी ने गृह-मन्त्री को गुन्डा तो नही लिखा था।

बाजोरिया (टहलते-टहलते) चैटर्जी की बात जाने दीजिए, दिवाकर जी, उसके साथ सैकडो बातें है। असलीयत समझना दूसरी बात है, व्यंग करना दूसरी बात। अगर आपका कोई अखबार होता...

दिवाकर गोया यह आपका अखबार है!

(टेलीफोन की घन्टी बोलती है।)

बाजोरिया ओह माफ कीजिएगा; मै भूल गया था।

दिवाकर नही, नही मै भूल गया था बाजोरिया जी। (टेलीफोन की घंटी) मैने आपको बुलाया था कि आज अखबार बेच ही दूँगा। लेकिन नही, भीख माँग कर अखबार निकालूँगा, फर्नीचर बेचकर अखबार निकालूँगा, अपने खून से छापूँगा, लेकिन आपके हाथ नही बेचूँगा। (टेलीफोन की घन्टी, तैश में रिसीवर उठाकर फिर पटक देता है।) नही बेचूँगा। मै आपका रुपया एक-एक पाई चुका दूँगा... (फिर टेलीफोन की घन्टी)

बाजोरिया (बात काट कर) दिवाकर जी, आप मुझे गलत समझ रहे है।

दिवाकर मै खूब समझने लगा हूँ आप लोगों को! (फिर टेलीफोन की लम्बी रिंग, झल्ला कर उठाता है। हाथ से ठोकर लग कर पियानो गिर जाता है।) उफ, ये भी कम्बख्त आफत है। (जोर से झल्ला कर) जी हाँ...जी हाँ...कह तो दिया, जी हाँ.... (कड़वे स्वर से) क्या?.....(सहसा मुखमुद्रा एकदम बदल जाती है) नाडी डूब रही है.....(बहुत भयभीत स्वर में) बहुत खतरा है... (व्यग्र स्वर में) कै फायल लेता आऊँ...तीन इन्जेक्शन? मै अभी लेकर आया...किसी तरह बचाइए उसे डाक्टर साहब.....सुनिए, सुनिए.....(निराश होकर फोन रख देता है—कुछ सोचते हुए) तीन फायल...उन्तालीस

रुपया और एक सौ पचीस हु...आ...एक सौ चौवन...नहीं एक सौ चौंसठ।

बाजोरिया (पास आकर) कैसी हालत है वाइफ की दिवाकर जी ?

दिवाकर (बिना सुने हुए, उसी धुन में) मेरे पास कुल है (खड़े होकर, जेब में हाथ डालकर) अरे कहाँ गए रुपये ? (सारी मेज छान डालता है, फिर घडी देखता है, फिर ड्राअर में देखता है। फिर बिल्कुल स्तब्ध-सा खडा हो जाता है।)

बाजोरिया आप परेशान क्यो है। (जेब से नोटों का बन्डल निकालता है, दिवाकर उधर ध्यान ही नही देता, स्तब्ध खडा है, फिर दाँत पीसकर माथा ठोंकता है।)

बाजोरिया दिवाकर जी आप क्या कर रहे है। लीजिए ये है रुपए, बाहर कार खडी है। (कन्धे पर हाथ रखकर) चलिए, जल्दी अस्पताल चलें।

दिवाकर बिल्कुल पत्थर की तरह खड़ा रहता है। जैसे वह संज्ञाशून्य हो, चेतनाहत हो, फिर मुड़कर कोट उतार कर पहनता है, फिर सेठ जी की ओर बड़ी कातर निगाहों से देखता हुआ, जैसे अभी रो देगा...

दिवाकर हालत.....उसकी हालत ठीक नही सेठ जी.....

बाजोरिया (घड़ी देखकर) जल्दी कीजिए।

दिवाकर (पास आकर, बहुत पास आकर, सेठजी के दोनों कन्धो पर हाथ रख कर) आप देवता है, आप देवता है सेठ जी ! मैं पागल हूँ, मै पागल हो गया था। अखबार आपका है। पहले मै कागजों पर दस्तखत कर दूँ।

बाजोरिया छि: ! आप कैसी बात करते है। मै अखबार नही....

दिवाकर (बात काटकर, चीखकर) मै तो अखबार बेचूँगा। आपने

कितना किया है मेरे लिए। आपने शीला की जान बचाई है, और मै आप पर अविश्वास करता हूँ। (चीखते और दाँत पीसते हुए) मै अहसान-फरामोश नही हूँ, लाइए कागज लाइए। (बाजोरिया कागज निकालकर देता है। दिवाकर बैठ जाता है। कागज खोलकर देखता है, फिर दस्तखत करता है। आवेश कुछ शान्त-सा पड गया है। एक निगाह उठाकर बाजोरिया की ओर देखता है, फिर बडी दर्द-भरी मुस्कराहट..... .)

दिवाकर (हाथ उस स्थान पर बढ़ाते हुए जहाँ पियानो रखा था) दूसरा कागज ? (पेन से टुन्कारता है, पर पियानो न पाकर कहता है—) अरे मेरा पियानो कहाँ गया ? (बाजोरिया उधर इशारा करता है, झुक कर नीचे देखता है, फिर हँसकर) डैम इट, कहाँ है दूसरा कागज ? (पैर से पियानो को ठुकरा देता है। बाजोरिया दूसरा कागज देता है, दिवाकर दस्तखत करता है। फोन की घन्टी बजती है। दिवाकर दस्तखत करके कागज फिर पढ़ता है। फोन की घन्टी फिर बजती है। वह कागज मेज पर रख देता है। रिसीवर उठाता है। बाजोरिया कागज उठाकर अपने हाथ में लेकर पढ़ने लगता है—)

दिवाकर (फोन पर) हलो.....हाँ हाँ, कहिए न,....मै ही हूँ....माई गाड ! (टेलीफोन पटककर उछल पडता है। बहुत ही उल्लास से—) बाजोरिया ! बाजोरिया जी, कितना दयावान है ईश्वर ! कैसे मौके पर बाँह पकडता है। मेरी मुसीबतें खत्म हो गईं दोस्त ! मै अब 'आवाज' नही बेचूँगा। (दाँत पीसकर) माई वाइफ इज डेड !

बाजोरिया क्या कह रहे है आप।

दिवाकर (ऊँचे गले से) मै सच कह रहा हूँ, बाजोरिया जी। अभी

उसका हार्टफेल हो गया। (गहरी साँस लेकर) अब 'आवाज' बेचने की जरूरत नहीं।

बाजोरिया आप पागल हो गए हैं। वह तो आप बेच चुके, बैनामा मेरे पास है। चलिए जल्दी अस्पताल।

दिवाकर (झट से मुड़कर मेज की ओर देखता है) कहाँ गए कागजात? लाओ उन्हें। मैं नहीं बेचूँगा। शीला की कसम, मैं नहीं बेचूँगा।

बाजोरिया (उन्हें जेब में रखकर) आप पागल हो गए हैं।

दिवाकर (चीखकर) हाँ। पागल हो गया हूँ। (पियानो जैसे मारने के लिए उठाकर) सीधे से दे दो वरना—(खींचकर फेंकता है।)

बाजोरिया भयभीत होकर पीछे उछल जाता है, पियानो अलग जा गिरता है।

बाजोरिया आप पागल.....(दर्वाजे की ओर भागता है, दिवाकर भी—)

दिवाकर (और चीखकर) हाँ मैं पागल हूँ (भागता है, चीखता हुआ) मेरे कागज दे दो, मैं 'आवाज' नहीं बेचूँगा.....(नेपथ्य में मोटर के फाटक बन्द होने की और कार स्टार्ट होने की आवाज—)

पर्दा गिरता है

संगमरमर पर एक रात

पात्र

मेहरुन्निसा
लाडली
जहाँगीर
शेर अफ़गन
बाँदी

घटना-काल : जहाँगीर का राज्य-काल

दृश्य १

आगरे के किले का एक हिस्सा। लाल पत्थरों की छत, सामने की ओर बीचोबीच एक संगमरमर की गोल फूलकारी का आधा हिस्सा जिसके समानान्तर अर्द्ध वृत्ताकार ३ संगमरमर की चौकियाँ पड़ी हैं। स्टेज पर बाँईं ओर मेहराबें और खम्भे, पीछे से दाँईं ओर आधी दूर तक एक लम्बी जाली की नकाशी हुई दीवार, दाँई ओर आगे एक गोल मुंडेर और बारजा।

स्टेज पर बहुत धुँधला प्रकाश। चौकियों पर कालीन बिछे हैं। एक चौकी खाली है। बाँदी आती है। जाली की दीवार के अन्दर से खाली चौकी पर आइना, पानदान, कस्तूरी, चाँदी की सुराही और कटोरियाँ रख जाती है। मुड़ेर के पास एक कमरबन्द और एक तलवार रक्खी है। जाते समय उसे देख कर रुक जाती है। फिर अन्दर चली जाती है।

बाँईं ओर से आवाज आती है--"लाडली!" धीरे-धीरे मेहरुन्निसा प्रवेश करती है। ३० वर्ष की परिपक्व, गंभीर, प्रौढ़ सुन्दरी। चाल में भराव जैसे भादों की जमुना। आँखों में तरल उदासी जो इस बात का चिन्ह है कि जिन्दगी में इस औरत ने बहुत कुछ खोया है, बहुत कुछ पाया है। आवाज में ललकार के साथ थकावट जैसे उसमें अब भी जिन्दगी को चुनौती दे सकने की ताकत हो पर सोचती हो कि जिन्दगी से लड़ना बेकार है। कौन जीत पाया है उससे? फिर भी एक आन है कि लड़ती ही जाती है। जब चुनौती स्वीकार कर ली तो पीछे हटना क्या?

मेहर मुझे ठंडे पत्थर अच्छे लगते हैं। (चौकियों पर हाथ फेरती है, जैसे फूलों की ढेरी पर हाथ फेर रही हो।)

बाँदी (सकोच से) और फिर कालीन इसलिये डाल दिये थे कि जहाँपनाह आने वाले हैं।

मेहर जहाँपनाह पर जोर मत दे। एक बेवा कसीदावाली के यहाँ कसीदे का ग्राहक आयेगा बस। (बाँदी चुपचाप चली जाती है। मेहर पत्थर की मसनद पर माथा रख देती है। गहरी साँस लेकर) कितनी राहत मिलती है इन पत्थरों पर सर रख कर।

जाली के पीछे से कुछ फुसफुसाहट होती है। मेहर चौंक कर तन कर बैठ जाती है। फुसफुसाहट बढ़ती है। वह मुड़कर देखती है। आवाज बन्द हो जाती है। बाँदी हाथ मे मोमबत्तियाँ लिए हुए आती है। मोम-बत्तियों की हल्की रोशनी में मुँडेर के पास कोई उतरता दीख पड़ता है।

बाँदी आँखों को उज्र न हो तो फानूस रोशन कर दूँ।

मेहर (सिर हिला कर हामी भरती है) जाली मे कौन है ?

बाँदी घबराकर कोई तो नहीं हुजूर।

मेहर (उठकर जाली के सामने वाली चौकी पर बैठ जाती है।) पता नहीं क्यों यह चौकी हमेशा गरम रहती है। जैसे कोई इस पर बैठा रहा हो और अभी-अभी उठ गया हो।

बाँदी लेकिन हुजूर इस पर कोई नही बैठता।

मेहर तो पत्थर खराब होगा।

फिर आहट आती है। मेहर दासी की ओर देखती है। दासी कुछ कहना चाहती है कि मेहर होठ पर हाथ रखकर चुप रहने का इशारा करती है। मुड़कर एक मेहराब के पीछे खड़ी हो जाती, है, बाँदी भी। किसी के कूदने की आवाज आती है। जाली के पीछे से लाडली

निकलती है। खोयी-खोयी सी अस्तव्यस्त, पल्ला सर से खसका हुआ। बालों की लटें माथे पर झूम आयी है। रूप-रंग में मेहरुन्निसा की बीस साल पहले की तस्वीर। छत पर किसी को नहीं देखती। तलवार के पास रुक कर 'अरे, तलवार भूल गये।' फिर दौड़कर जाली के अन्दर जाती है। घोड़े की टापों की आवाज सुन पड़ती है। स्टेज खाली।

मेहर बाहर आती है। आँखों पर हाथ कर इधर देखने की कोशिश करती है।

मेहर आँखे धोखा दे रही है। दीख नही पडता। कोई शाहजादा था, कुल्लाह गवाही दे रहा है। कौन है यह ?

बाँदी खामोश। लाडली को लौटते देख फिर छिपती है। लाडली तलवार को छाती से लगा कर कहती है, 'चले गये। जब तुम्हें भूल गये तो मुझे क्या याद रक्खेगे। छोड़ कर चल देंगे एक दिन।' और तलवार को चूम कर फिर छाती से चिपका लेती है। बाँदी उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए मेहरुन्निसा की निगाह बचाकर इशारे करती है पर लाडली अपनी धुन में डूबी है।

मेहर कौन था वह ?

बाँदी मेरे तो हाथ-पाँव फूल रहे है। पता नही कौन पापी था सरकार ? उसका सर उतरवा लेना चाहिये।

मेहर हूँ सर तो तेरा उतरेगा। बोल कौन था ? परवेज था ? शहरयार था ? कौन था ?

बाँदी हुजूर जान बख्शी जाय।

मेहर बोल।

बाँदी शाहजादे परवेज थे।

मेहर तो सुल्तान की निगाह बेवा पर है और शाहजादे की नजर उसकी बेटी पर ? बुलाओ लाडली को। ले आये उसकी तलवार। कर दे मेरे टुकडे।

बाँदी हुजूर बच्ची है। नासमझ है।

मेहर मैं भी नासमझ थी। जिन्दगी सब कुछ माफ कर देती है, नासमझी माफ नही कर पाती। मुझे यह भी देखना बदा था अपनी आँखो से। और तू—तेरी तो खाल खिचवा लूँगी।

बाँदी हुजूर मैं तो दाँतो तले की जीभ हूँ।

मेहर कुछ नहीं कहती। आग्नेय नेत्रों से जाली की ओर देख कर धीरे-धीरे उधर ही चली जाती है जिधर से आयी थी। दासी कालीनों को एक ओर समेटती है। इतने में लाडली आती है। ओढ़नी बदल कर आयी है। आते ही दर्पण देखती है, फिर बाँदी की ओर—

लाडली बोलती क्यो नही। चुप क्यो है ? क्या मै अच्छी नही लगती। तेरा भाई बीमार था ?

बाँदी जी हुजूर।

लाडली ले यह अशर्फी। दरगाह के हकीम से इलाज करवा लीजिओ। चल मेरी चोटी कर दे। नही, माँ से करवाऊँगी। माँ अभी तक कसीदा कर रही हैं ? आई नही ?

बाँदी आई थी हुजूर।

लाडली आई थी ! कब ? (स्वर बदल जाता है।)

बाँदी जब शाहजादे हरम मे थे।

लाडली ऐ। उन्होने देखा तो नही।

बाँदी नही सरकार। मैने उधर जाने ही नही दिया। पर उन्हें कुछ शक हो गया।

लाडली तूने कुछ बताया ?

बाँदी मैंने ! जबान खिंचवा ले कोई पर आवाज नहीं निकलेगी मुँह से जीते जी।

लाडली (लापरवाही से) ऊँह। मैं खुद आज कह दूँगी उनसे। मैं आज बहुत खुश हूँ। बहुत खुश। मुझसे उन्होंने साफ-साफ कहा—नहीं मैं तुझे क्यों बताऊँ ? पूछ रहे थे तुम्हारी माँ मुझे माफ कर देगी। मैंने कहा, क्यों नहीं ? माँ माफ कर देगी न ? माँ मेरी बहुत अच्छी है। क्यों ?

बाँदी जी सरकार !

लाडली बस, 'जी सरकार', 'हाँ हुजूर' जैसे तूने और कुछ सीखा ही नहीं। जा सितार उठा ला। (बाँदी अन्दर जाती है। लाडली फिर गौर से दर्पण देखती है। पता नहीं किस बात का खयाल कर दर्पण की ओर देख कर कहती है 'हटो' और लजा कर हाथ से दरपण ढँक लेती है। बाँदी सितार लाती है।) ला मुझे दे। तू उधर बैठ। नीचे नहीं मेरे सामने बैठ अरे बैठ भी। (हाथ पकड कर बैठाती है।) कुछ गा।

बाँदी क्या गाऊँ ?

लाडली कुछ भी गा।

बाँदी एक गजल है अमीर की।

लाडली (चाव से) कौन सी ?

बाँदी चु शम. नोजाँ चु जर्रः हैराँ हमेश गिरियाँ ब अश्क आँ मेह।

लाडली (मुँह बिचकाकर) ऊँ हुँ। फारसी नहीं। कुछ दिल के करीब हो। ये हिन्द की रात, ये हिन्द का चाँद, सल्तनते हिन्द का शाहजादा और गीत फारसी। कुछ हिन्दी फकीरों की चीजें क्यों नहीं सुनाती। वैसे दिन भर गुनगनाएगी।

बाँदी गऊघाट पर एक अन्धा फकीर रहता था। एक पद सुनाऊँ उसका—

लाडली (सितार छेडते हुए) सुना।

बाँदी गाती है

पिया बिन नागिन कारी रात
कबहुँक जामिनि उवज जुन्हैया डसि डलती हवै जात।
जन्त्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सिरानी जात !

लाडली गीत के बीच ही में उठ कर खड़ी हो जाती है। बाँदी चुप हो जाती है।

लाडली (गहरी साँस लेकर) 'नागिनि कारी रात।' गऊघाट पर रहता है यह फकीर ?

बाँदी अब तो शायद वृन्दावन चला गया है।

लाडली (उठकर टहलती है।) कबहुँक जामिनि उवज जुन्हैया डसि उलटी हवै जात। न मालूम कौन सा जज़्बा कब उलट कर आदमी को डसने लगता है। बाँदी क्या यह सच है कि बादशाह सलामत अब भी—

बाँदी (कुछ भय से) जी ?

लाडली कुछ नहीं। माँ कहाँ गयी। इनसान को क्या हो जाता है ? क्या किसी न किसी उम्र मे सभी—

बाँई ओर से मेहरुन्निसा आती है। धीमे-धीमे। आँखों की आग शांत पड़ गयी है। राख फिर छा गयी है। देखते ही दासी चौकी से उतर जाती है। लाडली दौड़कर लिपट जाती है। मेहर धीरे से अलग कर देती है।

मेहर सीधे बैठो। अब तुम बच्ची नहीं हो।

लाडली (मान से) तो क्या अब मैं बूढी हो गयी हूँ। इतनी-इतनी देर के लिए छोड कर चली जाती हो। (मेहर सिर्फ एक सूनी ठंडी

निगाह से उसकी ओर देखती है और लाडली जैसे बर्फ में दब जाती है। सहम कर कहती है) माँ क्या हुआ है तुम्हें ?

मेहर कुछ नहीं।

लाडली कुछ तो ? नहीं बताएगी ?

मेहर कुछ नहीं बेटा।

लाडली तो मेरी चोटी गूँथ दो।

मेहर गुँथी तो है।

लाडली ऐसी नहीं। बंगाली ढंग से। जैसी तुम बर्दवान में गूँथती थी।

मेहर बर्दवान की बातें बर्दवान के संग चली गयीं। (कड़े स्वर में) जाओ सोओ।

लाडली तुम भी चलो न ! (मचल कर) माँ !

मेहर तुम जाओ। मैं बादशाह सलामत का इन्तजार कर रही हूँ।

लाडली मुझे नींद नहीं आ रही है। पहेलियाँ नहीं बुझाओगी आज ?

मेहर पहेली तो बूझ रही हूँ बेटा। इस उमर में माँ के लिए बेटी बहुत बड़ी पहेली है।

लाडली (बिना समझे) तो बूझो न ? अच्छा बताओ।

जब काटो तब डहडहे बिन काटे कुम्हिलाय।
ऐसी अद्भुत नार का अन्त न पाया जाय।

नहीं समझी ! अरे शमा ! गुल न काटो तो टिमटिमाने लगती है ! है न ! अच्छा दूसरी बताओ। यह भी खुसरो की है :—

अजब तरह की है वह नार, वा का क्या मैं करूँ विचार।
दिन वह रहे नदी के संग, लाग रहे निसि वाके संग।

बताओ यह तो सभी जानते हैं। परछाईं ! माँ तुम तो कुछ नहीं जानतीं।

मेहर शमा ! परछाईं ! माँ कुछ नही जानती। याद पडता है कभी कुछ जानती थी माँ। पर माँ सब भूल गयी। लेकिन तू जो है याद दिलाने के लिए। कुरेद देती है रह-रह कर। लाडली ! (सहसा उसका स्वर कडा हो जाता है।) इधर आओ। बातो मे बहकाओ मत। माँ ने जमाना देखा है। माँ हर दौर मे गुजर चुकी है। समझी।

बाँदी (बात काट कर) हुजूर। जहाँपनाह आ रहे है।

बाँई ओर के मेहराबों से जहाँगीर आता है। आगे एक नजाबरदार और पीछे दो पार्श्वक आ रहे है। नेजाबरदार खड़ा होकर घोषणा करने के स्वरों में कहता है--"आलीजाह जहाँपनाह" कि सहसा जहाँपनाह उसका कन्धा छू कर संकेत से मना करते है। वह अकचका कर चुप हो जाता है। मेहरुन्निसा खड़ी होकर पल्ले से सर ढँक लेती है। लाडली सर झुका लेती है। बाँदी बिना मुड़े पीछे की ओर चलती-चलती जाली की ओर चली जाती है। नेजाबरदार भी इसी तरह लौट जाता है। जहाँगीर आगे आता है। लाडली अभिवादन करती है। जहाँगीर मसनदों वाली चौकी पर बैठ जाता है।

जहाँगीर (स्नेह और आदर से !) खडी रह कर मुझे शरमिन्दा न करे। आप बैठे। (लाडली की ओर देखकर) यह मेरी बेटी है।

मेहर (विनम्रता से) यह आपके बन्दे की बेटी है। (गर्व से) यह शेर अफगन की बेटी है। जाओ आराम करो बेटा।

लाडली बिना मुड़े पीछे की ओर चली जाती है। जहाँगीर इशारा करता है और दोनों पार्श्वक आगे बढ़ते है। एक के हाथ में जूही के फूलों की थाल है, दूसरे के हाथ में शराब की मीनाकर की हुई सुराही। दोनों सामने रखते है।

जहाँगीर आपको कोई एतराज तो नही है ? मै इस वक्त आपके घर मे हूँ ।

मेहर महल आपके ही है । हिन्द आप का है ।

जहाँगीर (गहरी साँस लेकर, फीकी हँसी हँसकर) हाँ, लोगों ने तो ऐसा ही मशहूर कर रक्खा है । खैर जाने दीजिए । (थाल में रक्खा हुआ एक जामा उठाकर) इसकी बेल आपने ही काढ़ी है न ? (व्यंग्य से) आपके कसीदे की तो ईरान और रूम मे शोहरत है । मगर यह आपने क्या किया ? मैंने जूही के फूल काढ़ने को कहे थे ।

मेहर तो क्या कुछ गलती हुई ?

जहाँगीर देखे ! (जामा उसके हाथ मे देता है) मैं जूही के फूल भी लेता आया हूँ । मुकाबला करे (मेहर बिना फूलो की ओर देखे, कुठित और अपमानित सी जामे को हाथ मे लेकर देखती है । फूलो पर उँगलियाँ रखती है)

जहाँगीर जी, अपनी उँगलियो से नही— जूही की कलियो से मुकाबला करे ।

मेहर (इस व्यंग्य पर तिलमिला उठती है । बिना फूलो की ओर देखे जामा रख देती है । और बिना जहाँगीर की ओर देखे कहती है ।) आप इसकी उजरत न दे ।

जहाँगीर (शिरोपेच उतार कर रख देता है) उजरत न दूँ ? मेहरुन्निसा प्यार भूल सकती है । जहाँगीर इन्साफ नही भूल सकता । आपने मेहनत की है । उजरत मिलेगी मगर किसी को उमर भर के लिए काँटो मे भटकने के लिए छोड कर, खुद फूलो की सेज पसन्द करने वाले को फूल और फूल के फर्क की जानकारी तो होनी ही चाहिए । (कुछ फूलो को फेंक कर, पैरों तले मसलते हुए) मगर औरत बेचारी को आदमी और

आदमी के फर्क की तमीज नही होती। किस्मत जिसे हाथ पकडा दे । (कटु व्यग्य से) बेचारी बेजबान औरत ।

मेहर (कुछ गुस्से, कुछ मानसिक चोट से काँपती हुई आवाज मे) जहाँपनाह, इतनी रात गए एक लाचार बेवा के हरम में ये बाते करना आपकी शान के खिलाफ है । आपका इन्साफ—

जहाँगीर इन्साफ ! मै भी इन्साफ चाहता हूँ । शेरअफगन की लाचार बेवा से नही मेहरुन्निसा से—

मेहर मेहरुन्निसा मर चुकी है । आज से २० साल पहले वह फ़लो में दफन कर दी गई थी । लेकिन उसे मर कर भी चैन नही । वह किसी से कुछ नही चाहती । सुहाग लुटा उसने उफ न की, राजपाट छोडकर रखिया बेगम की बाँदी बनी । आँखो की रोशनी ढाल ढाल कर अँगुली का खून गूँथ कर कसीदाकारी की कि किसी तरह अपना और अपनी बेटी का तन ढाँक सके मगर आगरे का इन्साफ-पसन्द शाहंशाह अपनी एक गरीब रियाया तक को इज्जत से गुजर करते हुए नही देख पाता ।

जहाँगीर मेहर.....!

मेहर मुझे कह लेने दीजिए जहाँपनाह । मै जानती हूँ सुबह होने तक मेरा सर उतरवा लिया जायगा । मुझे ! जिससे मुहब्बत का स्वाँग आपने भरा था आज से २० साल पहले, जब आप आवारे और शोहदे नवाबजादो के साथ इश्क की तलाश मे घूमते थे और कव्वालो की महफिल मे बैठकर साँप की तरह झूमते थे । उन्ही दिनो मुझे आपने देखा और दो कबूतर दिये । मुझे याद नही, मै कसम से कहती हूँ कि मुझे याद नही कौन कबूतर ? कैसे कबूतर ? क्यो दिये ?

कहाँ दिये आपने ? मगर आपने यह किस्सा मशहूर कर रक्खा है। गरज यह कि उनमें से एक कबूतर उड गया और आपको मुझसे मुहब्बत हो गयी। कैसी पुख्ता थी आपकी मुहब्बत की बुनियाद। और कितनी गहरी उतर गयी थी उसकी जडें ? लेकिन शाहंशाह अकबर आप को समझाते थे। वे नही चाहते थे कि मै शराब के प्याले की तरह पीकर फेंक दी जाऊँ। उन्होंने मुझे एक बहादुर और ईमानदार आदमी को सौंप दिया। मगर किस्मत ने मुझसे दुश्मनी ठान ली। मै आगरे आई और जिस दिन महलो मे मेंने कदम रक्खा उसी दिन से.....

जहाँगीर मेहरुन्निसा। मुझ पर गलत इल्जाम न लगाओ। तुम आगरे आई, मगर सिर्फ इसलिए कि कोई तुम पर उँगली न उठा सके। मैंने कभी इधर कदम भी रक्खा ? पाक इबादत मन्द रुखिया बेगम के पास मैंने तुम्हे रक्खा ताकि तुम्हारे जख्मी दिल को राहत मिले। मैंने तुम्हे गुजारा देना चाहा। तुमने कबूल नही किया। तुमने सौ बार इस किस्म की बेअदबियाँ की। अगर तुम्हारे दिल मे मेरे लिए कहीं कोई नर्म जज्बा न होता तो तुम कभी जुरअत न कर सकती। अपने दिल की तनहाइयो में तुम बार-बार उस प्रेम कहानी को दोहराती रही जो आज से २० साल पहले घटी थी। और फिर भी तुम्हारे मन का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से लडता रहा और तुमने हर तरह से मेरी ओर से एक सर्द दिली बनाये रखने की कोशिश की और हर बार दिल को धोखा देने की कोशिश करती रहीं।

मेहर लेकिन !

जहाँगीर मुझे भी अपनी बात कह लेने का मौका दो बेगम मेहरुन्निसा !

इस तरह २० साल बाद तुमने आकर फिर मेरे दिल के उस हिस्से को कुरेदना शुरू किया जो मुर्दा पड चुका था। २० साल में क्या-क्या नहीं गुजरा। तुम्हें खोया, तुम्हारी ओर से एक सर्द खामोशी मिली। उसके बाद जिन्दगी मे वे लोग आये जिन्होने मुझे प्यार किया, मेरी कमजोरियो के बावजूद मुझे प्यार किया, मेरे मन के घाव भरे। मगर वे लोग भी नही रह गए। पहले अनारकली छिनी, फिर खुसरू की माँ ने खुदकशी कर ली। जिसको आदमी प्यार करता है उसको खोकर चाहे चैन पाले, पर जिसने उसे प्यार किया है उसे खोकर आदमी पागल हो जाता है। आदमी मे कितनी वफादारी होती है ? लेकिन मैंने किसी तरह अपने को सम्हाला और मुझे सहारा किसने दिया ? तुमने नही इसने। (शराब की सुराही उठाकर एक प्याला ढालता है) मैं तुमसे प्यार माँगने नही आया था। इन्साफ माँगने आया था मेहरुन्निसा। (मेहरुन्निसा चुप रहती है। जहाँगीर उठकर टहलने लगता है) मुहब्बत (हँसकर) मेरी उमर ढल रही है और २० साल पहले के सपनो की ओर फिर लौट पडने वाली यह औरत समझती है कि मेरा प्यार अभी जिन्दा है। काश तुमने वह सब भोगा होता जो मैंने भोगा है तो तुम भी इसी संगमरमर के पत्थर की तरह ठोस और सर्द हो गयी होतीं मगर नही शायद औरत ज्यों-ज्यों जिन्दगी भोगती है त्यों-त्यों खोखली होती चलती है। परछाइयों की तरह.....

मेहर सलीम भाई !

जहाँगीर सलीम मर चुका है २० साल पहले जब मेहरुन्निसा मरी थी। मत भूलो शेरअफगन की बेवा जहाँगीर से बात कर रही है, समझी।

मेहर समझ रही हूँ। ३५ साल की जिन्दगी मे जो कुछ नही समझ मे आया वह आज इस रात समझ रही हूँ। और जो नही समझ पा रही हूँ उसे अब समझना भी नही चाहती। लेकिन मुझे अब आगरा छोडकर चले जाने की इजाजत दे। मै आप की जिन्दगी से दूर चली जाऊँगी।

जहाँगीर (हँसकर) जिन्दगी से दूर। कब्रवालो के ये फिकरे आप को शोभा नही देते बेगम। और इस महल से बाहर आप कदम नही रख सकतीं। एक दिन मैने दिल मे सोचा था मै खुदा पर भरोसा न कर सकूँगा पर आप पर कर सकता हूँ। पर आज एक जहरीली नागिन पर भरोसा कर सकता हूँ। आप पर नही। आप के दिल मे मेरे लिए कितनी नफरत है इसको भी मै जानता हूँ। आप मेरे किसी भी दुश्मन से मिल सकती है। यह भी जानता हूँ कि जिधर आप होगी उधर तीर चलाने के लिए मेरे हाथ उठने से इन्कार कर देगे। सल्तनत बर्बाद हो जायगी। मैने मुहब्बत बीस साल पहले की थी, सल्तनत आज तक चला रहा हूँ। (हँसकर) आपको महल से बाहर जाने दूं। आप समझती है मैने आप को मुहब्बत की वजह से महलो मे कैद कर रक्खा है। आप को! जिसे वफादारी और मोहब्बत से उतना ही परहेज है जितना मुसलमान को बुतपरस्ती से।

मेहर तो मै आप से आँचल फैलाकर भीख माँगती हूँ। मुझे काल कोठरी मे डाल दे लेकिन आप माँ-बाप के जज़बात को समझ सकते है। जब महल मे बेटी की अस्मत तक पर हमला होने लगे।.....

जहाँगीर आप की बेटी (तलवार पर हाथ रख कर) कौन है वह? आप बताइए। वह मेरी बेटी है।

मेहर गुस्ताखी माफ हो। शाहजादे परवेज.....

जहाँगीर (जोर से हँस पड़ता है, प्याले पीता जाता है) परवेज। शायरतबा परवेज! हर लड़की से वह प्यार करता है, हर लड़की पर गजलें लिखता है और उसे भूल जाता है। कल शायद वह बिल्कुल भूल ही जाय कि आज क्या हुआ था। लेकिन मैं उसकी हरकतों के लिए उसे सख्त सजा दूँगा। लेकिन मैं उसे जानता हूँ। इन शायरों का प्रेम कितना खोखला, कितना बेमानी होता है। हिन्दुओं की तरह ये हजारहा बुतों को दूर से पूजते हैं और हाथ नहीं लगाते और भूल जाते हैं। (फिर सुराही ढालता है।) लेकिन हम लोग जिनमें शायरी नहीं है, जो अपने जजबात को सिर्फ महसूस करते हैं जिनके अन्दर ही अन्दर मन में बहुत टूटे-फूटे बेढंगे खंडहर रहते हैं उनके मन में जब प्यार उतरता है तो बरबाद करके छोड़ता है। आप समझती हैं मैं अब किसी काम के लायक हूँ? सिर्फ इस ताज की जिम्मेदारी है, इस तख्त का तकाजा है; लेकिन कितने गलत हाथों में है यह तख्त, कितने गलत माथे पर है यह ताज। कितनी गलत है मेरी यह पूरी जिन्दगी। जैसे तवारीख की तख्ती पर किसी बच्चे ने गलत इबारत लिख दी हो, और शराब के समुन्दर भी इस गलती को मिटा नहीं पाते। (सर झुका कर बैठ जाता है। थोड़ी देर बाद शराब का प्याला हाथ में लेकर ऊपर शून्य में देखता है।) आप की छत पर आसमान कितना नीला है। आज से बरसों पहले जब खुसरू की माँ ने खुदकुशी की थी, मैं इलाहाबाद में दरिया की रेती पर एक घड़ियाल की खाल खिंचवा रहा था। मौत की खबर पहुँची। उसने अफीम खा ली थी। मैंने कुछ नहीं कहा। चुपचाप

बन्दूक मे बारूद की जगह बालू भरता रहा। रेते पर घडियाल के खून के थक्के जम कर नीले पड गए थे। जमना का पानी भी नीला था और बाद मे लोगों ने बताया कि अफीम से उसका गोरा चम्पई बदन भी नीला पड गया था। पता नही क्यो आज की रात मे वही नीला जहर है। यह प्याला उसी नीले जहर के नाम पर जिसने आप पर अपने फन का साया डाल रक्खा था। (फेक देता है) और यह प्याला किसी के नाम पर नही! (पी लेता है) यही असली नशा है। इसका एहसास कि जिन्दगी कितनी बेमानी है और फिर भी कठपुतलों की तरह जीते जाना। (खडा हो जाता है: जाते-जाते रुक जाता है) मै कहना हूँ कि अगर तुम मेहरुन्निसा न होती और २० साल पहले मैंने तुम्हें पूजा न होता तो . तो आज तुम्हें मै जबर्दस्ती अपने हरम में डाल लेता और तुम्हें मरोड डालता और (गहरी साँस लेकर) और सारा मसला हल हो गया होता, लेकिन बदनसीबी यह है कि कभी मैंने तुम्हें प्यार किया था और (दाँत पीस कर) और आज मै नफरत करता हूँ ..मै...मै...मै

मेहर (सहसा तैश में उठकर, शेरनी की तरह तडप-तडप कर) और मैं...और मै (दाँत पीस कर मेहराबो मे खोते हुए बादशाह की ओर देखती है) और मै ...

गला रुँध आता है। सहसा जामा उठाकर उसके चीथड़े-चीथड़े कर डालती है। फिर चौकी पर गिर सी पड़ती है। फूट-फूट कर रो पड़ती है। ठोकर लग कर सुराही लुढ़क पड़ती है। जाकर सितार से टकरा जाती है। सभी तार झनझना उठते है। मेहर सिसकती रहती है।

धीरे-धीरे पर्दा गिरता है।

दृश्य २

रात का उत्तरार्द्ध। मोमबत्तियाँ बुझ चुकी हैं। मेहर उसी जगह, उसी मुद्रा में पड़ी रोते-रोते सो गयी है। उसके लम्बे केश पीठ पर बिखरे हैं, कन्धों पर बिखरे हैं। नेपथ्य में लाडली गा रही है।

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देस।

जाली के अन्दर से बाँदी चिराग लेकर आती है, अर्द्धालोकित स्टेज पर चौकोर जाली की शतरंजी आलोक छाया सारे संगमरमर पर, सोई हुई मेहर पर पड़ती है, हिलती है, काँपती है, और मिट जाती है। बाँदी चिराग लेकर आती है। सुराही सीधी करती है। सितार उठाकर अलग रखती है। लाडली का गीत चल रहा है—

न नींद नैना, न अंग चैना, न आप आए, न भेजी पतियाँ।
न भेजी पतियाँ, न भेजी पतियाँ, न भेजी पतियाँ, न आप आए!

दासी क्षण भर सोई हुई मेहर की ओर देखती है। फिर उस पर एक शाल डाल देती है। गीत चल रहा है—

खुसरू रैन सुहाग की जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए इक रंग।

मेहर करवट बदल कर शाल को बाँहों में और भी समेट लेती है। दासी अन्दर जाती है। गीत चलता जा रहा है।

न नींद नैना, न अंग चैना, न आप आए न भेजी पतियाँ

मेहर सहसा उठ जाती है, क्षण भर चुपचाप बैठी रहती है फिर आवाज देती है।

'लाडली'

गीत थम जाता है। 'आई माँ' दूर से लाडली का स्वर आता है। मेहरुन्निसा सुराही उठाकर ऊपर रख देती है। थके हुए स्वर में कहती है 'पत्थर कितने ठंडे हो गए।' दूर कहीं पर तीन का गजर बोलता है। दायीं ओर से लाडली आती है।

मेहर (अत्यन्त शान्त स्वरों में) लाडली, सोई नहीं बेटी तुम ?

लाडली सोई थी माँ। नींद ही नहीं आती। मैं तो धीरे-धीरे गा रही थी तुम जाग गईं।

मेहर (एक क्षण अपलक नेत्रों से विचित्र दृष्टि से लाडली को देखती है। चुपचाप। गहरी साँस लेकर) बैठी-बैठी। तुम जूड़ा बाँधने को कह रही थी। आओ बैठो, बाँध दूँ।

लाडली नहीं रहने दो माँ।

मेहर आओ तो। (दर्पण लाडली के सामने रख देती है, सहसा स्वरों में बहुत स्नेह छलक आता है) मेरे कोई दो चार बेटे-बेटियाँ हैं ? (कुछ देर तक जवाब नहीं देती है। फिर बात टालने के लिये) लाडली एक दिन तू भी इसी तरह अपनी बेटी को गोद में बिठा कर जूड़ा बाँधेगी। उस दिन जानेगी कि सन्तान की ममता कितनी अंधी होती है। मेरी जिन्दगी सिर्फ तुझे देखकर कटती रही है। अभी तू गा रही थी तो मैंने सोचा कि तू ससुराल जायगी तो मेरी जिन्दगी कैसे कटेगी ? यह महल तो मेरे लिये कैदखाना है। फिर काल कोठरी को

चहक-चहक कर गूँजा देने वाली चिडिया भी उड जायगी। (गालो पर एक आँसू ढलक आता है। पल्ले से पोछ लेती है।)

लाडली मैं कही न जाऊँगी माँ। यही रहूंगी।

मेहर सभी लडकियां पराई होती है बेटा।

लाडली लेकिन....(दर्पण उलट कर रख देती है। कुछ मुडकर पल्ले का छोर उँगली पर लपेटते हुए) माँ एक बात बताऊँ? मै जाऊँगी नही। यही रहूँगी महलो में। अपनी माँ के पास। माँ तुम्हे एक बात बताने वाली थी। बताऊँ माँ?

मेहर (जूडे मे फूल लगाते हुए) मुझे मालूम है बेटा। (गहरी साँस लेकर) मालूम है। लेकिन मै भी तुझसे एक बात कहूँ? महलो के सपने छोड दे। मैंने इन्ही छतों के नीचे अपना बचपन बिताया है। इनके सहनो मे होने वाली ये चढती उमर की प्यार की बाते सिर्फ शाहजादो की दिलबस्तगी है, और कुछ नही। मैंने जिन्दगी देखी है और उसमे प्यार परछाइयो की तरह मिट जाता है बेटा, ये सपने मैंने भी देखे थे। मैंने भी!

लाडली मगर माँ, तुम लडी क्यों नही उन सपनों के लिए? तुमने जिन्दगी मे उनको एक शक्ल क्यों नही दी तुमने? सर क्यो झुका दिया?

मेहर (स्तब्ध हो जाती है, बेटी के इस अप्रत्याशित दुस्साहस पर भौहों पर बल पड जाते है। कुछ क्षण चुप रहती है फिर सहसा मुस्करा कर उसका सर प्यार से अपनी गोद मे दबा लेती है।) मेरी बेटी कितनी बहादुर है, और कितनी पागल, कितनी नासमझ। मै किसके लिए लडती?

लाडली (दूसरी ओर मुँह फेरकर हिचकिचाहट से) समझ लो माँ। मै क्या बताऊँ?

मेहर (फीकी हँसी हँसकर) तेरा मतलब बादशाह से है? तो तू भी उन कहानियो मे यकीन करती है?

लाडली नही माँ! कहानियाँ नही—

मेहर कहानियाँ नही तो और क्या? मै उसके लिए लड़ती थी। आज मुझे हर तरह से जलील करके गया है। मै उसके लिए—

लाडली माँ, फ़की कहती थी कि इतनी तीखी नफरत और गुस्सा इस बात का गवाह है कि बादशाह के दिल मे अब भी कितना गहरा खिंचाव है—

मेहर (अनसुनी करते हुए) मै उसके लिए लड़ती जिससे मेरा सहाग नही बर्दाश्त हुआ। जिसने मुझे बेवा बनाकर चैन ली।

लाडली यह झूठा इलजाम है। बादशाह कुछ हो, हत्यारे नही हो सकते। जिसने परवेज को पैदा किया हो वह हत्यारा नही हो सकता। वे खुद मुझे बता रहे थे कि इसमे बादशाह का कोई दोष नही था।

मेहर (कड़े स्वर मे) तू अन्धी हो गयी है लड़की।

लाडली मुझे नई निगाहें मिल गयी है। जब से (दाँतो मे ओठ दबा लेती है) तब से हर चीज अपने नए रूप में दीखने लगी है। जिन्दगी शायद उतनी कुरूप नही है माँ। आदमी-आदमी पर शक न करे, विश्वास करे, हमदर्दी रखे तो चीजों की बिल्कुल नई तस्वीर सामने आ जाती है।

मेहर और उस तस्वीर मे लड़की अपने माँ-बाप तक को भूल जाती है क्यो?

लाडली नही माँ। मुझे क्यो शरमिन्दा करती हो। पर गुजरी बात को लेकर बैठने से क्या? तुमसे गलती हुई तुमने उसे निभाया। अब उसे सुधार सकती हो, सुधार लो।

मेहर (डाँट कर) अपनी हद में रहो लाडली। तुम परवेज से बातें नहीं कर रही हो।

लाडली तुम बेकार नाराज होती हो माँ। अपने को धोखा देती हो और चाहती हो मैं भी उसी तरह अपने को धोखा दूँ। पर नहीं माँ, उन्हें वचन दे दिया है।

मेहर (उठ खड़ी होती है) क्या ?

लाडली हाँ, मैंने उन्हें वचन दे दिया है माँ।

मेहर (एक क्षण स्तब्ध फिर चीख कर) चली जा मेरे सामने से ! मैं कहती हूँ जा यहाँ से।

मारे गुस्से के फट पड़ती है और सिसक कर रोने लगती है। फर्श पर बैठ कर चौकी पर कुहनियाँ टिका कर रोती रहती है—धीरे-धीरे स्टेज पर अन्धेरा छा जाता है। मेहर को जैसे झपकी सी आ जाती है। जाली के पीछे से नीले रंग का अप्राकृतिक प्रकाश शतरंजी खानों के रूप में स्टेज पर तेजी से नाचता है और धीरे-धीरे मिट जाता है।—धीरे-धीरे अन्धेरे स्टेज पर बादशाह की छाया सी आती है। मेहर को चुपचाप देखकर आगन्तुक धीरे से पास वाली चौकी पर बैठ जाता है। एक गहरी साँस लेकर एक पाँव ऊपर उठा कर घुटने में सिर छिपा लेता है। मेहर की झपकी टूटती है।

मेहर कौन ! सलीम ! (उसकी ओर घूम कर) मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है सलीम ? तुम क्यों मेरी इज्जत खाक में मिला देने पर तुले हो ? मालिक छिन गया, अब बेटी छिनी जा रही है। किस जन्म की दुश्मनी निकाल रहे हो ? किस अभागे क्षण में तुम मेरी जिन्दगी में आये। तुम न आये होते तो मैं कितनी खुश रहती। हर आम लड़की की तरह शादी होती, बूढ़ी होती, बाल-बच्चों में घिरी एक दिन आँख मूँद लेती। मगर

यह हर घड़ी मौत से भी ज्यादा तकलीफ मुझे अंगारों से क्यों दहका देते हो। मैंने तुम्हारी जिन्दगी बरबाद कर दी तुम मेरा सर उतार लो लेकिन-लेकिन......

आगन्तुक (अपना सर उठाकर मेहर के सर पर हाथ रख देता है ठंडी सर्द आवाज में) बहुत तकलीफ है मेहर।

मेहर (सहसा डर से सफेद पड़कर) तुम। (दो कदम पीछे हट जाती है।)

आगन्तुक हाँ बेगम मैं हूँ! शेर अफगन। डरो मत। नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा मैं तो सिर्फ साया हूँ। (उठता है एक पैर से लँगड़ाता है। मेहर और पीछे हटती है) मैं तो तुम्हें छू भी नहीं सकता। मैं तो यह भी नहीं चाहता था कि तुम मुझे देखो। मगर झपकी आ गयी। कितनी ठंडी है यह छत। कितना अजब नीला है इसका आसमान। तुम अब भी बाहर ही सोती हो। मैं तो अक्सर आता हूँ। इसी चौकी पर बैठता हूँ। (शेर अफगन बैठ जाता है।) बैठो, बैठो मुझसे बातें करने में डर तो नहीं लगता? (मेहर सिर हिला कर नहीं करती है) तुम बेकार में यह तकलीफ भोग रही हो। तुम्हें अब तक जहाँगीर की बात कुबूल कर लेनी चाहिए थी। लेकिन वह भी एक अजब आदमी है। तुमसे साफ-साफ बात करने की हिम्मत नहीं। डरपोक है (हँसता है) और उलझा हुआ है खुद को भी नहीं समझता। (फिर हँसता है) बे सिर-पैर की बातें करता है खुद को तकलीफ देता है। जिसे प्यार करता है उसे तकलीफ देता है। (गम्भीर होकर) यह मत समझो कि मैं उससे नफरत करता हूँ, इसलिये बुराई करता हूँ। मुझे मरे तीन साल हो गये। तीन साल से मुर्दे का प्यार क्या और मुर्दे की नफरत क्या (मेहर अपनी

हथेली का पृष्ठ भाग दाँतो से काटती है) न। न। अपना हाथ न काटो। तुम ख्वाब नही देख रही हो, पर मै असलियत भी नही हूँ। बैठ जाओ। कोई खडा रहता है तो मै बात नही कर पाता। (मेहर बैठ जाती है) हाँ ऐसे। शादी करने मे मै रुकावट हूँ। पागल हो। (मेहरुन्निसा चुपचाप कातर निगाहो से अफगन को देखती है) तुम समझती हो मै तुम्हे और समझाँगा। पहले समझ सकता था पर तीन साल से इस धरती को जिन्दगी और मौत की सीमा पार कर बहुत दूर से देख रहा हूँ। धरती और इसके लोग। जैसे बासी-सूखी रोटी पर सैकडो चीटियाँ रेंग रही हो। उनके प्यार, उनकी नफरते, उनका घमंड, उनकी लडाइयाँ, उनकी सल्तनते सब कितनी छोटी मालूम पडती है। एक चीटी एक कतार से निकल कर दूसरी में चली गयी। इससे क्या होता है? मेरी इन मुर्दा आँखो मे रिश्ते बनना उतना ही बेमानी है जितना रिश्ते टूटना। कुदरत की माँग बिलकुल दूसरी होती है। कुदरत चाहती है आदमी पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी जिन्दगी को संगमरमर के महल के मानिन्द खूबसूरत, ठोस और आरामदेह बनाता चले। इस जिन्दगी मे इतना दुख और दर्द आता है कि आदमी उन्हे सहे और ठोस बनता चले। बस इतनी चीज काम की है। इसके अलावा प्यार, नफरत सब परछाइयाँ है। तुम क्यो परछाइयों के बीच मे भटकती हो। जिन्दगी की असलियत को देखो। तुम उम्र भर मुझे याद करके रोओ या दूसरे दिन जहाँगीर का हरम कुबूल कर लो, मेरे लिये दोनो एक है। बोलो तुम भी तो कुछ बोलो।

मेहर (गला रुँध जाता है) मेरे मालिक। पता नही मै ख्वाब देख रही हूँ। (आँखो मे आँसू छलक आते है)

शेर अफगन (आँसू की ओर इशारा कर) बस। बस। रोने-धोने के डर से मैं कभी बात नहीं करता था। औरतों की भावुकता से मुझे बहुत डर लगता है।

मेहर कभी जिन्दगी में भी इतनी देर बैठ कर तुमने सुख-दुख की बातें की होती?

शेर अफगन ओ...ह! हर सिपाही की बेगम को यही शिकायत रही है। अब बताओ मैं फौज सम्हालता, इन्तजाम देखता, शेर मारता या तुमसे बैठ कर बातें करता। और फिर सभी तो मेरी जान के गाहक थे। लेकिन इलजाम आया मफ्त में बेचारे जहाँगीर के सर। अच्छा सच-सच बताओ, मरे हुए आदमी से झूठ नहीं बोलना चाहिए। तुमने सलीम को कभी प्यार नहीं किया?

मेहर तुमने कभी मुझसे यह सवाल नहीं पूछा वरना तब भी तुमसे झूठ नहीं बोलती। एक उम्र थी जब मैं सलीम के पीछे पागल थी, जैसा एक उम्र में हर लड़की होती है। शादी हुई, आप मिले सब कुछ भूल गयी जैसे सभी औरतें भूल जाती हैं और अब...

शेर अफगन और अब तुम समझ नहीं पाती कि तुम सलीम को प्यार करती हो या नहीं। जानती हो मरने के बाद आदमी जिन्दगी को एक नक्शे की तरह साफ-साफ समझने लगता है। मैं तुम्हें बताऊँ कि आज उसे प्यार की जरूरत नहीं। उसे हमदर्दी की जरूरत है। उसे एक वजीर की जरूरत है। सिर्फ वह वजीर जरा खूबसूरत होना चाहिए।

मेहर (हँसी दबाती हुई) आपको तो मजाक सूझ रहा है।

शेर अफगन तो क्या हुआ बेगम। मरे हुए आदमी से क्या हँसने का भी हक छीनना चाहती हो? लेकिन खैर हल्के-फुल्के ढंग से गहरी बातें भी तो कही जाती हैं। और फिर जिन्दगी की

कोई भावना, कोई अनुभूति हमेशा के लिये नहीं मरती। पता नहीं कब जिन्दा हो उठती है। जहाँगीर अब भी जिद्दी बच्चा है। जिसको प्यार करता है उससे लड़ता है। तुम उसे बुरा मान जाती हो। मेरी ओर क्या देख रही हो।

मेहर (शर्मा कर) कुछ नहीं।

शेर अफगन कुछ तो?

मेहर आप की बातों से कितनी राहत मिलती है।

शेर अफगन (हँसकर) मेरी बातें संगमरमर की तरह ठंडी जो हैं। उनमें शायरी नहीं है, सचाई है। और वही तुम्हें समझा रहा हूँ। सलीम के मन की शायरी बीस साल पहले खत्म हो गयी। अब उसकी सच्चाई को क्यों ठुकराती हो? (किसी की पगध्वनि) कोई आ रहा है। अब मैं चलूँगा।

मेहर जाओगे? (आगे बढ़कर, भावविह्वल स्वर से) मत जाओ। (हाथ बढ़ाती है)

शेर अफगन छूना मत मुझे। (पीछे हटता है। एक पाँव से लँगड़ाता है।)

मेहर क्या हुआ?

शेर अफगन कम्बख्तों ने इसके जोड़-जोड़ चूर कर दिए। बहुत से थे बेगम। अब तो मुझे उनका नाम भी नहीं याद रहा। अच्छा खुदा हाफिज।

लँगड़ाता हुआ मेहराबों में गायब हो जाता है। मेहर एकटक उधर देखती रहती है। फिर सहसा आवेश से उसी चौकी को चूमती है।

मेहराबों में से जहाँगीर आता है। थोड़ी देर दूर खड़ा होकर देखता है। फिर आगे बढ़ता है। फिर मुड़ जाता है।

मेहर (सर उठाकर उसी तरह पड़ी-पड़ी) आओ सलीम।

जहाँगीर लौट कर बैठ जाता है। कुछ कहना चाहता है। फिर चुप हो जाता है। मेहरुन्निसा उठकर बैठ जाती है। बहुत शान्त स्वरों में कहती है 'कहो'!.... जहाँगीर एक क्षण चुपचाप मेहर की ओर देखता है। फिर कुछ बोलना चाहता है। फिर एक गहरी साँस लेता है। उठ खड़ा होता है। मेहर चिरपरिचिता की भाँति उठकर कन्धों पर हाथ रख कर जहाँगीर को बिठा देती है।

जहाँगीर (एक खाली प्याले को अँगुली से नचाता हुआ।) मैं आप से .....तुमसे माफी माँगने आया हूँ। मैंने पता नहीं क्या-क्या कह दिया। पता नहीं क्यों यह सब बातें मैं कह जाता हूँ। मुझे लगता है मैं जो कुछ कहता हूँ उसे खुद समझता हूँ या नहीं। मैं रात भर नहीं सोया हूँ, और सोचता रहा, और मैंने पाया कि मैं आज भी वहीं हूँ, बिलकुल वहीं जहाँ बीस साल पहले था। सारी जिन्दगी सिर्फ बादलों की तरह आई और ऊपर से बहती हुई चली गयी। और तुम मन में किस जगह जैसी थी वैसी ही हो। यकीन करो मेरा गुस्सा तुम पर नहीं अपने पर है। मैं अपने से जब कभी लड़ता हूँ बिना बात के सर्वा पर कठोर हो उठता हूँ। लेकिन फिर मैंने सोचा कि तुम पर कठोर होने का मुझे क्या हक? तुम्हें इस तरह महलों में कैद करने का भी क्या हक है? तुम जहाँ जाना चाहो आजाद हो। (मेहर कुछ नहीं बोलती।) तुम कहाँ जाओगी?

मेहर दक्खिन।

जहाँगीर ठीक। तुम्हारे सफर का इन्तजाम हो जायगा। लेकिन..... लेकिन (बहुत आजिजी की निगाह से देखकर) एक बार यह कह दो कि तुम माफ करती हो मुझे? मेरे सर पर हाथ

लाडली (सोचते हुए) शहनाइयों से ? एक क्षण रुक कर फिर सहसा जैसे कोई तथ्य एकाएक प्रतिभासित हो गया हो) शहनाइयाँ ! अच्छा तो क्या माँ ने...

शाहज़ादा हाँ। ठीक समझी आप। (व्यंग से) समझदार माँ की बेटी जो ठहरी।

लाडली (अनसुना करते हुये) चलो। आज रात भर मै माँ से बादशाह के लिये और आप के लिये लडती रही। मैने तो साफ-साफ कहा कि वे अपने को धोखा क्यो देती है और आप के लिये तो मुझे बहुत सुनना पड़ा। अब कुछ बख्शीश मिले बन्दी को...

शाहज़ादा (बहुत ठंडे स्वर मे) मै सिर्फ अपनी तलवार लेने आया हूँ। भूल से यहाँ छूट गयी थी।

लाडली (लुभाने वाले स्वर मे) क्यो ? और मै अगर वापस न दूँ तो।

शाहज़ादा लाइये।

लाडली नही। (छाती मे लगाती हुई) आप की तलवार मेरी रक्षा करेगी।

शाहज़ादा आपकी हिफाजत तो मुगल सल्तनत की पूरी फौज करेगी। पर मै अब शायद इधर रुख करना भी गवारा न करूँ।

लाडली (घबराकर) क्यो ? क्या कुछ कसूर हुआ मुझसे ?

शाहज़ादा आपका क्या कसूर ? आप को तो मै जानता भी नही। मै बेवा मेहरुन्निसा की लडकी को जानता था। मलकए मुअज्ज़मा की लडकी से मेरा क्या वास्ता...

लाडली लेकिन...

शाहज़ादा बस रहने दीजिये। माँ-बेटी दोनो एक सी है। माँ ने बादशाह पर जाल डाला, बेटी ने शाहज़ादे पर ! सल्तनत की प्यास भी आदमी को कितना जलील बना देती है।

लाडली (कुछ तेजी से, कुछ करुणा से) मैं कहती हूँ आप बिल्कुल गलत समझ रहे है । मैं जाल डाल रही हूँ ? मैं सिर्फ इतनी हूँ आप के लिये ?

शाहज़ादा इतनी भी नहीं । जो औरते खुदकुशी करके मर जाने वाली खुसरू की माँ का हक छीनने जा रही हो, उसकी बेटी मेरी क्या हो सकती है ? खुसरू मेरा सबसे प्यारा भाई था । मै उसका बदला लेकर रहूँगा । उसकी माँ की फटी-फटी आँखें मे आज तक नही भूल पाया हूँ । और आज एक फ़ाहशा औरत उसकी जगह...

लाडली (चीखकर) खबरदार जो मेरी माँ के लिये...

शाहज़ादा (और भी तैश में) कहूँगा । सौ बार कहूँगा ।

लाडली (तलवार खीचकर) मै कहती हूँ चले जाओ यहाँ से अभी !

आगे बढ़ती है, शाहज़ादा पीछे हटता है ।

शाहज़ादा मै मरते दम तक देखूँगा कि नई बेगम को चैन न मिले ।

लाडली (चीखकर) मै कहती हूँ चले जाओ वरना...

शाहज़ाद छज्जा लाँघकर पीछे कूद जाता है। अदृश्य हो जाता है । लाडली क्षण भर आग्नेय नेत्रों से उधर देखती है, और फिर पुकार कर कहती है 'ले जाओ अपनी तलवार.... अब कभी इधर कदम रखा तो' और कहते-कहते फूट-फूट कर रो पड़ती है । दाईं ओर से मेहर आती है । पोशाक बदली हुई सी लगती है । मुँह पर ताजापन और और तरुणाई । मेहर को देखते ही झट से आँसू पोंछ कर लाडली मुस्कराने का प्रयास करती है ।

मेहर मेरी बेटी । जाग गयी । सोई भी थी देर में । (प्यार से छाती में उसका माथा दुबका कर) तुम नाराज हो बेटी ?

लाडली नही तो माँ। मै बहुत खुश हूँ। (गहरी साँस लेकर) बहुत खुश हूँ। (आँसू छलक आते है)

मेहर तो रो क्यों रही है बेटी ?

लाडली (आँसू पोंछ कर) कुछ नही माँ। खुशी मे, खुशी मे, माँ !

मेहर लेकिन बेटा तू मुझे छोडकर कही नही जायगी। आगरे मे ही रहेगी हमेशा। बोल ?

लाडली (सिसकते हुए) हमेशा माँ। मै और कहाँ जाऊँगी किसके पास जाऊँगी माँ ? (फूट कर) मै किसके पास जाऊँगी माँ ? और कौन है मेरा ?

दोनों गले से लपट कर फूट-फूट कर रो पड़ती है। दूर कहीं पर तोप भी छूटती है और शहनाइयाँ भैरवी की गत में गूँज उठती है।

धीरे-धीरे सिसकियों के साथ पर्दा गिरता है।

सृष्टि का आखिरी आदमी

रेडियो-छन्द-नाट्य

पात्र

उद्‌घोषक
भीड़ का एक व्यक्ति
शासक
वैज्ञानिक
भीड़
सेना

घटना-काल : अनिश्चित भविष्य

किसी विशेष राजाज्ञा के समय होने वाली तुरही, शंख और नक्कारे की आवाज़। पृष्ठभूमि में एक व्यक्ति भारी आवाज से केवल "सुनो ऽऽ ओ सुनो ऽऽ" का अलाप भर रहा है।

उद्घोषक ओ इन्सानो !
ओ मनुराजा की सन्तानो
सुनो ओ सुनो !
बोल रहा हूँ मैं
भविष्य के एक नगर के चौराहे से
बोल रहा हूँ !
यह भविष्य के अन्धकार में छिपी
सभ्यता की नगरी है,
इस नगरी की देहरी तक पग धरते धरते
इतिहासों ने कितनी मंजिल तय कर डाली,
और संस्कृति ने कितनी करवटें बदल ली।
जिसका नकशा रेगिस्तानों की बालू पर
गरम खून से लिखा गया था;
जिसके शिलान्यास में कितने
नंगे, भूखे, मुर्दा बच्चे दफन हुए थे
तब यह नगरी बस पाई थी।
मैं भविष्य के उसी नगर के चौराहे से
बोल रहा हूँ !

चौराहे पर बहुत से व्यक्तियों का शोर। भय-त्रस्त स्वर, दबी हुई फुसफुसाहट जो कभी-कभी झल्लाहट का रूप ले लेती है। कभी-कभी कोई चीख पड़ता है; छोटे-छोटे बच्चों का क्रन्दन, भिखारियों की आवाजें, गाली गलौज; जो अन्त में उसी फुसफुसाहट में खो जाता है।

आवाजाही, धक्कामुक्की, चीख पुकारें
यह जो सारा शोर आपको सुन पडता है,
सच तो यह है नगर डगर में, गली गली में
बहुत भीड उमडी पडती है,
और नगर में तिल धरने को जगह नही है;
शोर बहुत बढ़ता जाता है!
जाने क्यो यह सभी लोग हो रहे इकट्ठे
चौराहे पर;
सभी ओर से उमडी आती भीड
हजारो बच्चे-बूढे, पुरुष-स्त्रियाँ जल्दी-जल्दी
क़दम बढ़ाते चले आ रहे।
लेकिन ये कुछ अजब लोग है,
इनके हाथ पाँव छोटे है,
माथा धँसा हुआ अन्दर को
पेट बढ़ा है आगे निकला,
माँस लोथडों जैसी दो गन्दी सी पलके झूल रही है!
इनकी गति मे शान नहीं है।
गन्दे मेढ़क से कीचड मे
फुदक-फुदक कर चलते है ये!
दल के दल ये चले आ रहे

जैसे घृणित प्लेग के चूहे
चले आ रहे हों गलियों में

शीशे के फर्श पर सैकड़ों चूहों की पगध्वनियों की आवाज।

जाने क्या है आज
भीड़ बढ़ती जाती है !
इनकी बातों से कुछ नहीं समझ में आता
इनकी बोली बदल गई है !
कहते हैं सदियों पहले इन इन्सानों ने
काला गाढ़ा खून पिया था
सड़े हुए मुर्दे खाये थे
तब से इनकी आवाजें ही बदल गई हैं।

कुछ घुटते हुए और सिसकियों जैसे स्वर में भीड़ की आवाज। उनींदे स्वर में जैसे मंत्र-मुग्ध शव कह रहे हों "कुछ रहस्यमय कलुष अमंगल होने को है।" लगता है यही वाक्य होठ से होठ तक ध्वनि-प्रतिध्वनि की तरह वर्तुलाकार लहरों में फैलता जाता है !

फिर भी जो कुछ सुन पड़ता है
उससे ज्ञात हो रहा है यह
आज नगर में कुछ रहस्यमय कलुष अमंगल होने को है
पिछली रात सितारों से रह रहकर
कुछ ऐसी आवाजें आई थीं ज्यों
कोई जिन्दा व्यक्ति
आग की लपटों में भूना जाता हो !
और रात से झोंकों में
कुछ भुने माँस की वदबू सी है !

सारी रात बिताई लोगों ने
भय-विव्हल, आतंकित मन !
सुबह हुई तो देखा पच्छिम के पहाड़ पर
एक आग का जलता बादल टँगा हुआ है !
झुलस गये हैं जगल घाटी
चट्टानें तक चिटख गई है
जगह जगह पड गई सभ्यता में दरार है !
घबराये से लोग घरो से भाग रहे है !
चौराहे पर भीड जमा है !
कहते है यह महासृष्टि का अतिम दिन है
आज आत्महत्या कर लेगी सारी धरती !
लोग बहुत घबराये से है,
भाग रहे है ।
भीड हो रही है अनियंत्रित !

सहसा भीड़ के स्वर को चीर कर फौजी बैंड बज उठता है और शोर को कुचलता हुआ सैनिक घोड़ों की टापों का स्वर आता है ।

लो आ गई सुसज्जित सेना
जगह जगह बन्दूक हाथ में लिये सिपाही
खडे हो गये !
लोग सहम कर शान्त हो गये !
लेकिन यह क्या
उधर दूर पर वहाँ मच रही है कुछ गडबड !

'चुप रहो', 'बोलने दो उसे' 'हाँ ! हाँ ! क्या करते हो ?
'मैं कहूँगा मरते दम तक', आदि आवाजें आती हैं, आपस में गुँथ जाती है; शोर में तबदील हो जाती है

उधर दूर पर वहाँ मच रही है कुछ गड़बड
कई सिपाही एक व्यक्ति को पकड़ रहे हैं
वह उनके बन्धन में
तडप तडप कर कुछ कहता है
दो सिपाहियों ने उसकी बाहें पकडी है
एक हाथ से बन्द कर रहा है उसका मुँह
लेकिन वह भी बिना कहे चुप नही हो रहा है
वह देखो अब सुन पड़ता है :—

इस व्यक्ति का स्वर

सुनो भाइयो !
हम भी चूहे, तुम भी चूहे
और सिपाही भी चूहे है !
गो कि हाथ में उनके बन्दूकें है, लेकिन
ये बन्दूको वाले चूहे भी है केवल खेल खिलौने
रग-बिरंगी वर्दी वाले
नहीं आग के बादल से ये जीत सकेगे

सैनिक कवायद की ध्वनि, बिगुल की आवाज, बादल की गरज।

मार भले लें हमको, लेकिन
महानाश के तूफानो मे
ये भी पीले पत्तों जैसे झर जायेगे
आज सृष्टि का अन्तिम दिन है
आज सिमट कर आस्मान हम पर टूटेगा
सारी रात सितारों में मरघट सुलगा है
तुम्हें दे रहा हूँ चितावनी
मैंने रात चन्द्रमा पर देखे है
लाल खून के धब्बे !

आज चाँदनी के मग संग लोहू बरसेगा
यम के अजगर मुँह फाडेंगे, साँसें लेंगे
चूहे हैं ! हम चूहे हैं ! मर जायेंगे

भीड़ गमगीन स्वरों में दोहराती है--"हम चूहे हैं मर जायेंगे ! हम चूहे हैं मर जायेंगे।" पहले निराशा, दुख और कसक भरे स्वरों में कुछ लोग गाते हैं फिर और लोग भी स्वर मिला देते हैं। पहले निराशा, अवसाद और मृत्यु से पराजय के पश्चात्ताप का स्वर, फिर अवसाद दृढ़ता में बदल जाता है जैसे चूहे होना और मरना ही उनका भाग्य और उनका जीवन-दर्शन है। पर फिर भी एक घबराहट स्वरों में पछाड़ खा रही है। सहसा भीड़ की आवाज को चीर कर उसी व्यक्ति का स्वर आता है। लाचारी और नपुंसक गुस्से का स्वर--"हम चूहे हैं मर जायेंगे।"

गोलियों की धाँय धाँय। उसके बाद खामोशी, मरघट का सा सन्नाटा।

उद्घोषक खत्म हो गया !
उसे सैनिको की गोली ने भून दिया है।
काली काली सडक खून से लाल हो गई
उसकी लाश पडी है अब तक !
भीड महज़ खामोश खडी है,
कई भयातुर बच्चे केवल सिसक रहे हैं।
भीड महज़ खामोश खडी है !
पच्छिम के पहाड पर छाये हुए
आग के जलते बादल मे
कुछ काली-काली लहरे दौड रही हैं।
दूर घाटियों मे

अन्धी विषभरी हवाएँ
साँय साँय करती चलती है
भीड महज खामोश खडी है ।

सैनिकों का मार्च, बैंड पर शाही गत बजने लगती है ।

भीड़ फिर गाने लगती है—"वह चूहा था मर गया और हम चूहे हैं मर जायँगे !"

सैनिक बाँध रहे हैं पाँव
भीड रास्ता छोड रही है
सुनते हैं अब खुद शासक आने वाला है !

भीड़ का स्वर तेज होता जाता है। "हम चूहे हैं मर जायँगे, हम चूहे हैं क्यों चूहे हैं क्यों चूहे हैं ?"

तुरही और नक्कारे की आवाज ।

लो खुद नगरी का शासक दौडा आया है ।
चौराहे के बीचोबीच खडा होकर
कुछ बोल रहा है !
सैनिक संगीनों से घेरा डाल रहे हैं ।
भीड और भी बेकाबू होती जाती है
यह शासक का ऊँचा स्वर है ।

शासक शर्म करो ! शर्म करो !
मेरी नगरी के रहने वालो !
आखिर इतनी घबराहट क्यों ।
महज चूँकि तारों में मरघट जले रात भर ।
या कि पच्छिमी पर्वत पर
यह जलता बादल टँगा हुआ है !
ओ कम्बख्तो ! भूल गये तुम,

मैंने अपने राज्य-काल में
सोने से मढ़ दीं दीवारें
धरती पर फौलादी चादर चढ़ी हुई है
नदियों पर भी मीलों लम्बे बाँध बँधे हैं
फिर मेरे इस प्रजातन्त्र में
बिना वोट के नहीं फूल तक खिलता है जब,
क्या मजाल है
बिना वोट के यहाँ कयामत झाँक सके तो !
लेकिन फिर भी मैं इस बादल को
गोली की बौछारों से
अभी बुझा देने का हुक्म दे रहा हूँ !
सेनापति ! ...

भीड़ में शोर गुल । फायरिंग । एक के बाद कई राउन्ड ।

उद्घोषक सैनिक आसमान पर गोली चला रहे हैं
लेकिन महाकाल की प्यासी जीभ सरीखा
बादल धीरे-धीरे बढ़ता ही जाता है ।

बादल की गरज ।

कोई दूर पहाड़ी पर से धीरे-धीरे उतर रहा है ।
लम्बी दाढ़ी, ढीला चोगा, तीखी आँखें !
कहते हैं वह वैज्ञानिक है, जादूगर है, युगद्रष्टा है ।
उसने सात पीढ़ियाँ देखी है अपनी बूढ़ी आँखों से ।
भीड़ उसे रास्ता दे रही,
राजा तक उसके आदर में खड़ा हो गया !

दो सेकण्ड तक खामोशी ।

धीरे धीरे, बढ़ता बढ़ता
वह उस शव तक पहुँच गया है
पडा हुआ जो बीच सड़क पर !

दो सेकण्ड तक खामोशी ।

झुका हुआ है वह उस शव पर !

क्रूर अट्टहास

उसे देख कर हँसता है वह !
कैसी है खूंखार हँसी यह
कैसी है खूंखार हँसी यह !
शासक के चेहरे पर है छा गई सियाही
घब·ा कर...लो वह क्या बोला—

शासक बन्द करो यह हँसी
बन्द करो यह...
बन्द करो...
बन्द...

वैज्ञानिक (हँसते-हँसते) आखिर आज प्रलय का पहला अक्षर
तुमने लिख ही डाला !
मैंने अपनी इन आँखों से
सात पीढ़ियाँ बनते और बिगड़ते देखीं
और सुना था
जिस दिन पच्छिम के पहाड़ पर लपटों का बादल छायेगा,
और सड़क पर एक लाश करवट बदलेगी,
उस दिन इस नगरी का अन्तिम क्षण आयेगा ।
ओ इस अन्तिम क्षण तक जिन्दा रहने वालो
आज तुम्हारे साथ खत्म हो जायेगी यह

एक सृष्टि की, एक सभ्यता की गन्दी बेशर्म कहानी !
यह सोने के महलो में रहने वाले
चूहो की संस्कृति
आज ध्वस्त होने वाली है ।

शासक बन्द करो यह राजद्रोह !

वैज्ञानिक ...यह द्रोह नही है !
तुमने खुद यह मौत बुला ली है अपने पर
देखो अभी करवटें लेगा यह नंगा लावारिस मुर्दा,
और पहाडो को चूमेगा ।
यह बादल, यह नदियाँ, यह कठोर चट्टानें
इसका शासन मानेगी
यह मुर्दा
पहला शुभ्र चिन्ह है महाप्रलय का !

शासक सेनापति...

वैज्ञानिक कहने दो मुझको

शासक सेनापति ! बन्दूकें...

वैज्ञानिक इन बन्दूको से तुम कब तक
अपनी किस्मत को टालोगे ?
यह बन्दूकें मैंने ही खोजी थीं जिनसे
आज स्वयम् मेरी आवाज दबाते हो तुम !

शासक सेनापति !
इस पागल की कुछ दवा चाहिये !

(फायरिंग)

वैज्ञानिक आ ऽ ऽ !

भीड़ का शोरगुल । वैज्ञानिक की घायल कराह ! भीड़ का फुसफुसाता हुआ स्वर:—

हम चूहे हैं मर जायेंगे।
यह जादूगर चूहों का है,
यह राजा भी चूहों का है
यह मुर्दा भी चूहों का है
हम चूहे हैं, मर जायेंगे।

वैज्ञानिक मेरा गला घोट दो चाहे,
लेकिन कैसे रोक सकोगे
उस भविष्य के बढ़े कदम को
यह बादल तो बरसेगा ही
मुर्दे अपना बदला लेंगे

पुनः फायरिंग।

आधी भीड़ मुर्दे अपना बदला लेंगे!
आधी भीड़ हम चूहे हैं मर जायेंगे!

धीरे-धीरे दोनों आवाजें आपस में गुंथने लगती हैं। बादल की गरज—बिजली गिरने की तड़प।

उद्घोषक वैज्ञानिक की लाश उठा कर
पागल जनता भाग रही है!
गरज रहा है वह लपटों का खूनी बादल
सचमुच, सचमुच करवट बदल रहा है मुर्दा
यह क्या वह तो खड़ा हो गया
उसकी पलकें डोल रही हैं,
उसके काले सूखे होठ हिल रहे हैं कुछ
यह क्या वह तो बोल रहा है!

मुर्दा भागो मत! भागो मत!
तुम कब तक भागोगे?

तुमने खुद मौत बुलाई है, स्वीकार करो
तुम उस नगरी के वासी हो
जिसकी नीवों में छोटे छोटे बच्चों की खोपड़ियाँ हैं।
तुम उस नगरी के वासी हो
जिसमें भूखे गीदड़ नारी की लाशों के संग सोते हैं।
तुम उस नगरी के वासी हो
जिसमें सपने, हत्या से हथकड़ियों से तोले जाते हैं।
तुम उस नगरी के वासी हो
तुम उस नगरी के
उस नगरी के
उस नगरी के
वासी हो
भागो मत, भागो मत
तुम कब तक भागोगे ?
यह मौत तुम्हारी इमारतों की
ईंट ईंट से फूटेगी
यह मौत धरा से उबलेगी
यह मौत गगन से टूटेगी।
यह मौत बुलाई है तुमने
स्वीकार करो।
भागो मत भागो मत !
तुम कब तक भागोगे ?

शासक (भयत्रस्त स्वरों में) सेनापति......

सेनाओं के एलर्ट होने की आवाज ! फायरिंग।

मुर्दा ·यह बन्दूकें यह सेनाएँ

कुछ काम नही देंगी मुझ पर
मै मृत्युलोक से लौटा हूँ
मृत्युंजित हूँ ।
मेरे माध्यम से कोई और बोलता है
मै धरती की, जनता की
प्रभु की वाणी हूँ !
जिसके सीने पर तुमने युद्ध रचाये थे
ये भवन बसाये थे जिसके कंकालो पर !
अब तक मै चुप था,
बोल रहे थे तुम
अब मै बोलूँगा, मेरी बारी है ।
अब तक तुम आगे बढ़ते थे
मै जंजीरो में बँधा घसिटता था पीछे,
अब मेरे कदम उठे है
धरती काँपेगी !
अब मेरी बेला आई है ।
मै बदला लूँगा
ध्वस्त करूँगा यह नगरी
इसकी गलियों में पिघली हुई
आग की नदियाँ उबलेंगी ।

जनता के भागने के स्वर ।

भागो मत !
कब तक भागोगे !
धरती के हर टुकडे के नीचे

कोई लाश इसी मौके के इन्तजार में लेटी है।
वह कदम तुम्हारे जकड़
चूस लेगी तुमको !
तुम जिनको युग से कुचल-कुचल चलते आये
वे अब धरती को फोड़ सतह पर आयेंगे !
यह ज्वालामुखी पहाड
युगों से नफरत सीने में दाबे
खामोश खड़ा है।
लेकिन अब यह धधकेगा
खूँखार दानवो की लोलुप जिह्वा जैसी
अनगिन लपटें
इस नगरी को खा जायेंगी !
मुर्दे अपना बदला लेंगे

आधी भीड़ मुर्दे अपना बदला लेगे !

आधी भीड़ हम चूहे हैं मर जायेंगे !

भीड़ के भागने के शोरगुल पर यह दोनों आवाजें भूखी चीलों के मानिन्द मंडराती हैं और आपस में गुँथ जाती हैं।

उद्घोषक भाग रही है भीड !
नगर में हाहाकार मच रहा है !
वह मुर्दा स्वयम् हाथ से घावों को दाबे
फौलादी छाया सा
डगमग बढ़ता जाता है पच्छिम को !
वह जिधर-जिधर जाता है भगदड़ मचती है
सड़कों पर सन्नाटा छाता,
गरज रहा है रह-रह कर लपटों का बादल !

वह धीरे पच्छिम के पर्वत पर चढ़ता जाता है !
लोग अभी तक भाग रहे हैं !
लेकिन कोई राह नहीं है
गलियों से गलियों में दौड रहे हैं जैसे
भूल भुलैयों में पागल कुत्ते भटकें !
वह पहुँच गया है पर्वत के उच्चतम शिखर पर
एक बार आग्नेय दृष्टि से
देख नगर की ओर, देख कह रहा है पर्वत से :—

मुर्दा
कितनी सदियो से तुम
नगरी के सिरहाने चुपचाप खडे हो !
जैसे मरने वाले के सिरहाने यम के मृत्युदूत
अपने मौके की ताक देखते हों गुपचुप !
वह मृत्युपर्व अब आया है !
इन्सान गली-कूचों में पागल कुत्तों जैसा रोता है,
चन्द्रमा खून के छीटो से मुँह धोता है !
तुम भी अपना बदला ले लो !
अनगिन भट्टियाँ नरक की कबसे धधक रही हैं सीने में
कितना जहरीला धुआँ युगों से घुटता है !
बस एक पर्त पत्थर की उस पर जमा हुई है
जिससे अब तक महाध्वस बचता आया है ।
आज चूम कर उस पत्थर को गला रहा हूँ !
धधको ओ भूखे ज्वालामुखि,
अपनी गहन गुफाओ में बन्दी
जहरीले अग्निदानवो को कर दो उन्मुक्त !
धधकती उल्काओ से
जो धरती का जर्रा जर्रा झुलसा डालें, पिघला डालें !

चूम रहा हूँ मैं अपने मुर्दा होठों से काला पत्थर
धधको ओ भूखे ज्वालामुखि !
ओ भूखे ज्वालामुखि !
धधको, धधको, धधको, धधको,

हजारों कंठों का 'धधको धधको' का शबरमंत्र की भाँति पाठ।
दो क्षण बिलकुल खामोशी।

सहसा गड़गड़ाहट और भयानक विस्फोट। धरती के चिटखने, तूफानों के पागल घोड़ों जैसे दौड़ने, इमारतों के ढहने का भयानक शोर। उसी में भागदौड़, चीख-पुकार, मार्मिक करुण रोदन। लगता है जैसे नरक के निम्नतम कुंड में से यह शोर उबल पड़ता है। धीरे धीरे हज़ारों बिल्लियों की रोने की आवाज। फिर शोर दूर चला जाता है और अन्त में एक अव्यक्त सिसकी मात्र।

उद्घोषक नष्ट हो गया !
सब कुछ आखिर नष्ट हो गया।
लाखों बरसों से,
कण कण तृण तृण पर जो निर्माण हुआ था
नष्ट हो गया !

गरज गरज कर बरस रहा है
महानाश का जलता बादल !
पिछली हुई आग की नदियाँ
नगर डगर को निगल रही है।
छोटे छोटे, बच्चे बूढ़े,
तरुण औरतें, झुलस रही है
भुने मांस की तीखी कड़वी बदबू से मर घूम रहा है।

ककुआ काला धुआँ
झुलसते हुए नगर की
अंतिम चीख़ पुकारो का दम घोंट रहा है।
लाशें सडे हुए कीचड मे तैर रही है।
यह पिघले सीने की कीचड !
हँसता है वह
पर्वत की चोटी पर खड़ा हुआ हँसता है !
दोनो हाथो से नगरी पर
पिछली आग उलीच रहा है !
महानाश के वजूो को वह
उठा उठा कर फेंक रहा है
आग उसे न जला पाती है,
हवा उसे न डिगा पाती है,
चट्टानें उससे टकरा कर टूट रही है ।
वह ज़िन्दा विद्रोह
तरल नफरत से पागल
मृत्युंजित वह
आत्म-तुष्टि से वह हँसता है !
उसकी पलकों पर परतें जम गईं राख की !
पिछली हुई आग की कीचड मे घुटनों तक
धँसा हुआ है।
लेकिन उसके माथे पर उल्लास फूल सा खिला हुआ है !
इस घाटी से उस घाटी पर
राजमहल से चौराहे तक
गलियों से गलियों में
डगमग घूम रहा है

सड़ी घिनौनी लाशों पर
चलता फिरता वह घूम रहा है !

धीरे-धीरे शोरगुल, क्रन्दन समाप्त। क्षण भर सन्नाटा। केवल उसके भारी पावों की धमक।

अब कोई ज़िन्दा नही बचा
सारी नगरी लाक्षागृह जैसी पिघल गई !
अब फैली फैली धरती पर
कोई भी जिन्दा हस्ती साँस न लेती है।
इस मुर्दे ने सम्पूर्ण सभ्यता को चुटकी में मसल दिया।
बस एक हवा का पागल झोंका
भटक रहा है गलियों में
संस्कृति की उखडी साँसो सा !
एक आग की और खून की महानदी
सिर धुनती, लाशो को झुलसाती
आगे बढती जाती है !

नदी की भयानक घर-घर और उसमें घुली-मिली सियारों के रोने की आवाज ।

अब धरती पर इन्सान नहीं पैदा होगा !
वह शर्मनाक इतिहास न अब दोहरायेगा !
इस धरती की गोद सदा के लिये
आग से झुलस गई
यह बाँझ धरा
कुछ दिन मे अब
मुर्दा ग्रह सी, बिल्कुल ठंडी पड़ जायेगी।

सियारों का रोदन एकाएक थम जाता है।

लेकिन यह क्या ?
यहाँ खेत की पगडण्डी के पास रुक गया वह,
कुछ झुक कर देख रहा है,
अभी आग की नदी यहाँ न पहुँच पाई है !
देख रहा है क्या वह ?
एक बाल गेहूँ की लम्बी, दुबली, पतली
मृदुल धूप की चुनरी ओढ़े झूम रही है।
और पास में एक जंगली फूल खिला है।
मुर्दे की वह
राख सनी भूरी सी पलकें आर्द्र हो गईं
उस गेहूँ की तरुण बाल को
आशीर्वादो की निगाह से देख रहा है।
लो उसने तो बदल दिया रुख
हाथ उठा कर
पिघली हुई आग की जलती महानदी से
कहता है कुछ।

मुर्दा ठहरो !
ओ ज्वालामुखि अपना बंद करो मुख!
धरती के सीने में जहाँ छिपी थी नफरत,
वहीं सृजन का एक बीज यह छिपा हुआ था।
जो प्रलयंकर तूफानो से नही डरा
जो चट्टानो की पर्त तोड कर उठ आया है।
यह भविष्य की नई सृष्टि का प्रथम चिन्ह है,
इसे प्रणाम करो ओ आग उगलते सूरज !
रक्त-स्नात ओ चाँद !
आग की महानदी ओ ! इसे प्रणाम करो !

इस गेहूँ के लघु दाने में
एक नई सभ्यता छिपी है शरमाई सी !
इसमें बसी हुई है नव गंधर्व-नगरियाँ,
इसमें एक नया दर्शन साँसें लेता है।
नई कल्पना, गीत नया, इन्सान नया,
इस गेहूँ की हरी बाल की
शीतल छाया में पनपेगा !
एक सभ्यता मिटा चुका मैं,
इस गेहूँ की और फूल की तरल छाँव में
एक नई संस्कृति का अब निर्माण करूँगा।

नदी की घर घर दुगुनी हो जाती है। सियार फिर रोने लगते हैं।

उद्घोषक लेकिन यह क्या ?
पिघली हुई नदी आगे बढती जाती है
भूखे साँपों जैसी लाखो जीभ पसारे
पिघली हुई आग आगे बढती जाती है !
तन कर खडा हो गया वह
ललकार रहा है !

मुर्दा नहीं सुनोगे !
मैं कहता हूँ, ठहरो ओ बहरे ज्वालामुखि !
ओ अन्धे तूफान आग के
अपने कदम न आगे धरना !
खत्म हुआ अब नाश, नया निर्माण हो रहा।
नहीं रुकोगे ?
मैं मृत्युंजित हूँ,
तुम मुझे न खा पाओगे !

ओ नफरत के काले दानव !
तुमसे भी मैं हाथ आजमा लूँगा हँस कर !
ठहरो, ठहरो, ओ नफ़रत की पिघली ताकत
ओ लपटों की सूनी आँधी !
यह गेहूँ की बाल
जंगली फूल
नई दुनिया के पहले चिन्ह अनोखे
इन पर अगर आँच आई तो
चाँद सितारों को धरती पर बिखरा दूँगा !

नदी की घर्घराहट और समीप आती है।

उद्घोषक लेकिन आग नहीं रुकती है।
महानदी, भूखी दानवी सरीखी
अपने केश बिखेरे
सौ सौ तूफानों के बल से बढ़ती जाती
पहुँच गई लो उसी जगह तक !
उसने गेहूँ की बाली को
बाँहें फैला घेर लिया है।
वह सीने पर उन लहरों को झेल रहा है
खड़ा गले तक दफन आग में, तरल आग में
कदम उखडते हैं पर
तनी हुई लोहे सी देह
और माथे पर नई सृष्टि का सपना।

धीरे-धीरे नदी का शोर घटता है। एक बहुत सुकुमार संगीत गूँजने लगता है और दूर कहीं पर पूजा वेला की घंटियाँ बजने लगती हैं।

पिघली हुई आग की बाढ़
घट रही है अब,
इन्द्रधनुष दो चार उतर आये हैं
उन पर, ज्योतिवृत्त से !
पिघली हुई आग की बाढ घट रही है अब !
निर्निमेष पलको से जाने
किस भविष्य की
नई सृष्टि को देख रहा है ।
किसी नये मानव का सपना
जो इस गेहूँ की शीतल छाया में
फूलों सा पनपेगा !

नदी का शोर कतई बन्द । घुंघरू की आवाज और फिर बिल्कुल नीरवता ।

बाढ़ खत्म !
धरती फिर ऊपर उभर रही है
एक स्वर्ग-संगीत
घाटियों में घुंघरू सा नाच रहा है !
जिसकी लय पर एक नया इन्सान ढलेगा !
जिसकी लय पर ही,
जीवन के सभी मूल्य फिर से बदलेंगे
जिसकी लय पर
होठों पर चुम्बन आयेंगे
पलकों में आँसू छायेंगे
जिसकी लय पर एक नई सभ्यता अवतरित होगी फिर से !
जिसकी लय पर,

अब प्रशांत ज्वालामुखि के पीछे से
झाँक रहा है
नई सृष्टि का पहला सूरज,
खिले गुलाबों सी जिसकी रतनारी आभा
ध्वस्त सृष्टि को फिर से आलोकित करती है।
टूटे-फूटे खण्डहर खिले गुलाब सरीखे सुन्दर लगते
यह आखिरी मनुष्य सृष्टि का,
नई सृष्टि का मनु बन कर आगे बढ़ता है !
यह धरती की नई परत है
मैं भविष्य के और बाद आने वाले
भविष्य के क्षण में,
बोल रहा हूँ !
ओ मनु राजा की सन्तानो !
सुनो ! ओ सुनो !
बोल रहा हूँ
नई सृष्टि का
उद्घोषक मैं !

तूर्य-नाद, शंखध्वनि, मंगलवादन और किसी नवजात शिशु की प्रथम मुस्कान का सहज, सुन्दर, सरल संगीत !